Tc.No. : GUJHIN00722

पेज: 4, मुल्य 1 रु.

क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्ष: 1 अंक: 03 , 25 सितम्बर, सोमवार 2017, सूरत, हिन्दी दैनिक 9879141480

4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष, सचीन रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-गुजरात

सार समाचार

चोरी के शक में युवक को पीट कर मार डाला

नई दिल्ली। रन्हौला इलाके में चोरी के शक में लोगों ने की पीट-पीट कर रणवीन नामक एक युवक की हत्या कर दी। पंचनामा भर पुलिस शव पोस्टमार्टम के लिए संजय गांधी मेमोरियल अस्पताल भिजवा दिया और हत्या का केस दर्ज कर दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनसे पूछताछ कर रही है। पकड़े गए आरोपियों के नाम सचिव व लोकेन्द हैं। केस दर्ज कर पुलिस दो अन्य आरोपियों की तलाश में है। पुलिस के मुताबिक मृतक मूल रूप से बिहार के समस्तीपुर का रहने वाला था और एक फैक्टरी में काम करता था। जांच-पड़ताल में पता चला कि रणवीर रत्नाकर आपर्टमेंट में रहने वाले सुधीर की फैक्टरी में काम करता था। कुछ दिन पहले ही सुधीर ने रनहौला थाने में चोरी की शिकायत दर्ज करवाई थी। उनका कहना था कि उनकी फैक्टरी से मंहगी मशीन चोरी हो गई है, जिसकी कीमत लगभग 14 लाख रुपए है। उन्होंने मशीन चोरी करने का आरोप अपने नौकर गुड्डू कुमार पर लगाया था। केस दर्ज कर पुलिस ने जांच शुरू की और गुड्डू को जब धर दबोचा। पुलिस पूछताछ में गुड्डू ने रणवीर के भी चोरी में शामिल होने की जानकारी दी। प्राप्त जानकारी के आधार पर पुलिस रणवीर की तलाश में थी। इस बीच सुधीर तथा अन्य आरोपियों ने रणवीर को पकड़ लिया और जमकर पीटे जाने के कारण रणवीर की मौत हो गई। पुलिस ने रणवीर का शव फैक्टरी में मिला, जबकि हत्यारोपी रणवीर के बारे में कोई जानकारी न होने की बात कहकर पुलिस को लगातार गुमराह करते रहे। पकड़े जाने पर आरोपियों ने बताया कि चोरी के शक में बुधवार को लाठी-डंडों से जमकर पिटाई के बाद रणवीर की मौत हो गई। आरोपियों का दावा था कि फैक्टरी में पांच साल पहले हुई चोरी में भी गुड्डू व रणवीर का हाथ था। पुलिस के मुताबिक आरोपी रणवीर का शव ठिकाने लगाना चाहते थे, लेकिन उनकी करतूत सीसीटीवी कैमरे में रिकार्ड हो गई। केस दर्ज कर पुलिस सुधीर व बंटी नामक आरोपियों की तलाश में है।

लिव इन पार्टनर पर दर्ज कराया प्रताड़ना का केस

नई दिल्ली। कश्मीरी गेट थाना इलाके में लिव इन में रह रही एक महिला ने अपने ही पार्टनर पर मारपीट करने और प्रताड़ना का आरोप लगाते हुए थाने में केस दर्ज कराया है। पुलिस को दिए अपने बयान में महिला ने बताया कि वह अपने लिव इन पार्टनर संजीव के साथ कश्मीरी गेट इलाके में पिछले आठ साल से रह रही है। पीड़ित महिला के अनुसार 2001 में उसकी शादी सुल्तानपुरी थाना क्षेत्र निवासी एक शख्स से हुई थी। जिससे उसके तीन बच्चे हैं। शादी के काफी साल गुजरने के बाद करीब आठ साल पहले उसकी दोस्ती संजीव नामक शख्स से हुई। दोस्ती बाद में इतनी परवान चढ़ी की उक्त महिला अपने पति और बच्चों समेत पूरे परिवार छोड़कर संजीव के साथ लिव इन में रहने लगी। इस दौरान संजीव से उसका एक बेटा भी हो गया। महिला का आरोप है कि इन आठ सालों में उसने संजीव से बार-बार शादी को कहा लेकिन वह शादी के लिए तैयार नहीं हुआ। इस बात को लेकर 18 सितंबर को दोनों के बीच जमकर झगड़ा हुआ। जिसके बाद संजीव ने उक्त महिला को रोकने की कोशिश करते हुए उसके कपड़े जला दिए और बुरी तरह से मारपीट की। इस दौरान आरोपी ने पीड़िता महिला के बाल भी काट दिए। पीड़ित महिला के मुताबिक घटना के बाद किसी तरह से वहां से भागकर उसने अपनी जान बचाकर अपनी बहन के घर पहुंची। जहां से बाद में उसे अरुणा आसफ अली अस्पताल ले जाकर भर्ती कराया गया। इस बात पुलिस को सूचना देकर शुक्रवार को मामला दर्ज करते हुए स्थानीय पुलिस ने आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। फिलहाल आरोपी फरार बताया जा रहा है।

बेकरी में लाखों की चोरी

नई दिल्ली। रोहिणी जिले के साउथ रोहिणी थाना इलाके में बदमाश देर रात सेंध लगाकर एक बेकरी में घुस गए और लाखों की नकदी व अन्य सामान चोरी कर फरार हो गए। पीड़ित बेकरी मालिक का नाम पुरूषोत्तम (38) है। पीड़ित पुरूषोत्तम अपने घर के चिले माले में बेकरी चलाते हैं। पुलिस को दी शिकायत में उन्होंने बताया कि शुक्रवार देर रात बेकरी बंद कर वह घर आ गए। सुबह वापस पहुंचे तो बेकरी का ताला टूटा छा और अंदर सामान फैला था।

केंद्र को समर्थनः

अवैध रोहिंग्या को वापस भेजने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल

नयी दिल्ली। अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने वाले रोहिंग्या मुसलमानों की पहचान करने तथा उनको उनके देश वापस भेजने के केन्द्र के रूख का समर्थन करते हुए सुप्रीम कोर्ट में एक नयी याचिका दायर की गयी है।

केन्द्र ने भारत में अवैध रूप से रह रहे करीब 40,000 रोहिंग्या मुसलमानों की पहचान कर उन्हें वापस म्यामां भेजने की बात कोर्ट में कही थी।

संभवतः नयी याचिका पर सुनवायी स्वदेश भेजे जाने के खिलाफ दो रोहिंग्या मुसलमानों की ओर से दायर जनहित याचिका के साथ ही होगी। दोनों जनहित याचिकाओं पर सुनवायी तीन अक्तूबर को होने की संभावना है।

वकील एवं भाजपा नेता अश्विनी कुमार उपाध्याय का कहना है कि न्यायालय की रजिस्ट्री में उनकी याचिका स्वीकार हो गयी है और पहले से तय तारीख पर उसकी सुनवायी होगी। इस याचिका में न्यायालय से अनुरोध किया गया है कि वह केन्द्र को निर्देश दे कि वह बांग्लादेशी नागरिकों और रोहिंग्या सहित सभी अवैध आव्रजकों और घुसपैठियों की पहचान करे, उन्हें हिरासत में ले और उनके देश वापस भेजे।

शरण और सुरक्षा के बीच रोहिंग्या

याचिका में कहा गया है, बड़ी संख्या में आने वाले अवैध आव्रजकों ने, विशेष रूप से म्यामां और बांग्लादेश से आने वालों ने, ना सिर्फ सीमावती जिलों की जनांकिकी के लिए खतरा पैदा किया है बल्कि वर्तमान स्थिति में सुरक्षा और राष्ट्रीय एकीकरण के लिए भी गंभीर खतरा उत्पन्न किया है।

इस याचिका में आरोप लगाया गया है कि एजेंटों और दलालों के माध्यम से बेहद संगठित तरीके से म्यामां से अवैध आव्रजकों को लाया जा रहा है।

रोहिंग्या मामला:शरणार्थी नहीं,वो अवैध तरीके से भारत में रुके-राजनाथ

उसमें कहा गया है कि एजेंट और दलाल बेनापोले—हरिदासपुर और हिल्ली (पश्चिम बंगाल), सोनामोरा (त्रिपुरा), कोलकाता और गुवाहाटी के माध्यम से रोहिंग्या आव्रजकों को ला रहे हैं।

उसमें कहा गया है, यह स्थिति बेहद गंभीरता से राष्ट्र की सुरक्षा को नुकसान पहुंचा रही है। इस बीच जनहित याचिका दायर करने वाले रोहिंग्या आव्रजकों मोहम्मद सलीमुल्ला और मोहम्मद शाकीर ने दावा किया है कि म्यामां से भागने के बाद उन्होंने भारत में शरण ली है। वह म्यामां में समुदाय के साथ हो रहे भेदभाव, हिंसा और खून—खराबे के कारण वहां से भागे हैं।

उन्होंने हाल ही में केन्द्र के हलफनामे पर अपना जवाबी हलफनामा दायर किया है।

अवैध पार्किंग पर अब होगी कठोर कार्रवाई

नई दिल्ली। कुछ मागरे पर अवैध रूप से वाहन खड़ा करने पर कड़ी कार्रवाई हो सकती है। दिल्ली यातायात पुलिस ने 29 ऐसे मागरे को नो टोलरेंसे जोन घोषित किया है। दिल्ली यातायात पुलिस संयुक्त आयुक्त गरिमा भटनागर के मुताबिक कुल 29 मागरे को चिह्नित करके उनपर सड़क किनारे अवैध रूप से वाहन पार्क करने को लेकर नो टॉलरेंस जोन घोषित किया गया है। ये निर्देश आगामी 25 अक्टूबर से लागू हो जाएगा। दिल्ली यातायात पुलिस और एमसीडी साथ मिलकर कार्रवाई करेंगे। चयनित 29 मागरे में प्रमुख रूप से अरोविन्दो मार्ग पर अरोविन्दो चौक से अंधेरिया मोड़, मथूरा रोड पर नीला गुमबंद से बदरपुर फ्लाईओवर, सावित्री फ्लाईओवर से चिराग दिल्ली क्रॉसिंग तक, मेहरौली बदरपुर रोड पर अनुवरत मार्ग से मथूरा रोड, एमबी रोड से इग्नू चौक, सरिता विहार की लाल बत्ती से कालिंदी कुंज फ्लाईओवर तक, मेहरौली गुरुग्राम मार्ग पर सीडीआर चौक से डेरा मोड़ तक, सरदार पटेल मार्ग पर 11 मूर्ति से धौलाकुंआ, देशबंधू गुप्ता रोड पर पहाड़गंज फ्लाईओवर से झंडेवालान, न्यू रोहतक रोड, पटेल रोड पर पूसा से मोती नगर चौक तक, नजफगढ़ रोड, पंखा रोड पर उत्तम नगर से सागरपुर तक, बाहरी रिंग रोड, रिंग रोड पर विजय नगर से बुराड़ी चौक, जीटी करनाल रोड पर पल्ला लाल बत्ती चौक से सिंघु बॉर्डर चौक, शहीद जगत नारायण मार्ग, डॉ. एमसी दवार मार्ग, महाराजा अग्रसेन मार्ग से शालीमार बाग, जीटी रोड, 66 फुटा रोड एक्सटेंशन, पुस्ता रोड पर खजुरी चौक से शास्त्री पार्क होते हुए चिल्ला बॉर्डर।

सहपाठी ने दोस्तों के साथ मिलकर छात्र पर बोला जानलेवा हमला अस्पताल में भर्ती

पूर्वी दिल्ली। कल्याणपुरी क्षेत्र में एक स्कूल के परीक्षा कक्ष में बातचीत करने का विरोध करने पर सहपाठी छात्र ने परीक्षा के बाद दो दोस्तों के साथ मिलकर 11वीं कक्षा के एक छात्र पर हमला कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया और फरार हो गए। गंभीर हलात में हरीश कुमार (18) को लालबहादुर शास्त्री अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसका उपचार चल रहा है। कल्याणपुरी थाना पुलिस आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उनकी तलाश कर रही है।पुलिस के मुताबिक हरीश सपरिवार हरिजन बस्ती कोंडली में रहता है और राजकीय सर्वोदय विद्यालय कोंडली में 11वीं कक्षा का छात्र है। गत 19 सितम्बर को उसकी हिंदी की परीक्षा थी। दोपहर ढाई से शाम साढ़े पांच बजे के बीच परीक्षा के दौरान हरीश की कक्षा में पढ़ने वाला एक छात्र बार-बार बातचीत कर रहा था। हरीश के विरोध करने पर उसने परीक्षा के बाद उसे देख लेने की धमकी दी। परीक्षा समाप्त होने के बाद हरीश के स्कूल से बाहर निकलते आरोपी ने दो दोस्तों के साथ मिलकर उसपर हमला किया और मारपीटकर लहूलुहान कर फरार हो गया।

2 सालों से महिला टीचर का कर रहा था पीछा फिर हुआ कुछ ऐसा...

मुंबई। मुंबई की एक मजिस्ट्रेट अदालत एक 62 साल के बुजुर्ग को तीन महीने की जेल की सजा सुनाई है। कोर्ट ने उसे 55 साल की टीचर को दो साल तक पीछा का दोषी पाया है। इसके अलावा कोर्ट ने बुजुर्ग पर पांच हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है जोकि महिला को दिए जाएंगे।

इस्तखर अंसारी 55 वर्षीय महिला टीचर का उस समय पीछा करता था जब वह अपने स्कूल जाती थी। कोर्ट ने कहा कि पूरी सुनवाई के दौरान महिला द्वारा बताई गई जानकारी सही पाई गई है। वहीं, बुजुर्ग ने तर्क दिया कि वह उस रोड में स्थित एक दुकान से कुछ सामान खरीदने जाता था। कोर्ट ने इस तर्क को खारिज कर दिया।

कोर्ट ने कहा कि जिस तरह से बुजुर्ग महिला टीचर का दो सालों तक पीछा करता रहा, वह पूरी तरह से डराने वाला है। कोर्ट में सबूत पेश करने के दौरान महिला ने बताया कि साल 2015 में वह एक स्कूल में पढ़ा रही थी और हार्बर लाइन ट्रेन से जाती थी।

एक अपमान की टीस ने रिक्शा चालक के बेटे को बनाया आईएएस,लोगों की बोलती बंद

नई दिल्ली। इंसान खुद को साबित करने के लिए डट जाता है कि उसके बारे में जो बोला जा रहा है वह वैसा नहीं है। दिल पर जब कोई बात चुभती है तो इससे व्यक्ति खुद को अपमानित महसूस करता है और सकारात्मक सोच के लोग इस अपमान का बदला लेने के लिए खुद को साबित करके लोगों की बोलती बंद करते हैं। ऐसे ही एक रिक्शा चालक ने अपने अपमान का बदला बेटे को आईएएस बनाकर लिया। यह कहानी बनारस के एक रिक्शा चालक की है। खबरों के मुताबिक रिक्शा चालक नारायण जायसवाल की आर्थिक स्थिति काफी ज्यादा खराब थी तो उन्होंने रिक्शा चलाकर अपने परिवार को पेट भरने लगे। उन्होंने खुद ही रिक्शे में बेटे को बैठाकर स्कूल छोड़ने जाने लगे। लेकिन लोगों ने जब देखा कि रिक्शावाला अपने बेटे को स्कूल भेज रहा है तो उसका मजाक उड़ाने लगे।

मजाक उड़ाने वालों में कई लोग ऐसे भी थे जो कहा करते थे कि देखो ये अपने बेटे को आईएएस बनाने ले जा रहा है। नारायण के बेटे गोविंद जायसवाल को ये बात चुभ गई। उन्हें अपने पिता का संघर्ष और लोगों को मजाक उड़ाना बहुत बुरा लगता था। यह सब देखकर उन्होंने अपने मे मन मे ठान लिया था कि वह अपने परिवार को अब एक सम्मानजनक जीवन देंगे। लेकिन उन घर में और आसपास जो माहौल था उसे देखते हुए सिविल सर्विस की तैयारी करना बहुत कठिन था।

केरल का पिकअप ड्राइवर रातोंरात बना करोड़पति, जानिए कैसे जीते 10 करोड़

नई दिल्ली। केरल के पिकअप ड्राइवर की किस्मत ने ऐसे पलटी मारी कि रातोंरात वह करोड़पति बन गया। केरल सरकार ने शनिवार को बंपर ओणम लॉटरी का ऐलान किया जिसमें मुस्तफा मूत्ताथरमाई द्वारा फर्स्ट प्राइज यानी 10 करोड़ रुपए जीतने का ऐलान किया गया। पेश से ड्राइवर मुस्तफा ने ईनाम ऐलान होते ही अपनी टिक एक बैंक के हवाले कर दी। बैंक अब विजेता टिकट संख्या के एवज में 10 करोड़ रुपए मुस्तफा के खाते में जमा कराएगा। ध्यान रहे कि केरल सरकार की ओर से ओणम के मौके पर हर साल लॉटरी का ऐलान किया जाता है जिसमें करीब 100 लोगों को अलग अलग श्रेणी में ईनाम दिया जाता है। इस लॉटरी का फर्स्ट प्राइज 10 करोड़ रुपए निर्धारित हैं जिसे इस साल पेशे से ड्राइवर मुस्तफा ने जीते।

सरकार ने विजेता टिकट नंबर का ऐलान किया तो काफी देर का कोई भी दावेदार सामने नहीं आया। इसी दौरान अफवाहों का बाजार गर्म हुआ और कई लोग अपने पास टिकट होने का दावा करने लगे। तभी दोपहर बाद मुस्तफा ने फेडरल बैंक के मैनेजर को अपनी टिकट सौंपी। एक अंग्रेजी अखबार से बात करते हुए मुस्तफा ने बताया कि लॉटरी जीतने की जानकारी उन्हें शुक्रवार को ही हो गई थी, लेकिन वह मीडिया की नजरों से बचने के लिए किसी को इस बारे में नहीं बताया। और फिर जब ईनाम बांटने का समय नजदीक आया तो उन्होंने बैंक में जाकर टिकट सौंप दी।

खबरों के अनुसार, मुस्तफा एक सामान्य परिवार से आते हैं। बचपन में ही उनके पिता की मौत हो गई थी। इसके बाद वह नारियल के व्यापार से जुड़ गए थे। मुस्तफा अब 10 करोड़ रुपए जीतने के बाद एक छोटा का घर बनाना चाहते हैं और कुछ पैसा लगाकर अपने व्यापार को बढ़ाना चाहते हैं।

पीएम मोदी बोले, मैंने हमेशा अपने कार्यक्रम को राजनीति से दूर रखा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम को तीन साल पूरे हो गए हैं। रविवार को मन की बात संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि यह देशवासियों की भावनाओं और अनुभूति की यात्रा रही है।

मोदी ने आकाशवाणी पर अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात में कहा कि उन्होंने इस कार्यक्रम को हमेशा आचार्य विनोबा भावे की उस बात को याद रखा है, जो वह हमेशा कहा करते थे अ-सरकारी, असरकारी और इसलिए उन्होंने अपने कार्यक्रम को राजनीति के रंग से दूर रखा है और इसमें सामान्य जन को केन्द्र में रखते हुए स्थिर मन से उनके साथ जुड़ने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम से उन्हें देश के सामान्य मानव के भावों को जानने-समझने का जो अवसर मिला है और इसके लिए वह देशवासियों के बहुत आभारी हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि मन की बात के तीन साल पूरा होने के बाद समाज विज्ञानी, विश्वविद्यालय, शोधकर्ता और मीडिया विशेषज्ञों को इसका विश्लेषण करके देखना है कि इसमें क्या गुण-दोष रहे और यह विचार-विमर्श भविष्य 'मन की बात' के लिए भी अधिक उपयोगी होगा और इससे एक नई चेतना और ऊर्जा मिलेगी।

उन्होंने कहा कि मन की बात की 36 वीं श्रृंखला है और इसके जरिए उन्हें लोगों की भावनाओं, इच्छाओं, अपेक्षाओं और शिकायतों को समझने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि उन्होंने यह नहीं कहा कि यह उनके मन की बात है।

100 करोड़ की प्रॉपर्टी और बच्ची को छोड़कर यह शख्स बना संत, पत्नी इस वजह से नहीं ले सकी दीक्षा

भोपाल। मध्य प्रदेश के नीमच जिले के रहने वाले सुमित जैन शनिवार को संत बन गए। हालांकि, उनकी पत्नी अनामिका को भी दीक्षा लेनी थी, लेकिन कुछ वजहों से नहीं ले सकीं। बता दें कि दोनों 100 करोड़ की प्रॉपर्टी और अपनी तीन साल की बच्ची को छोड़कर दीक्षा ले रहे थे। संत बनने की दीक्षा दिलाने का यह कार्यक्रम गुजरात के सूरत में हुआ। 35 वर्षीय सुमित राठौड़ को आचार्य रामलाल जी महराज ने दीक्षा दिलाई। अब वे सुमित मुनि से पहचाने जाएंगे। रामलाल जी महराज ने बताया कि सुमित की पत्नी अनामिका की संत की दीक्षा कुछ कागजी कार्रवाई पूरी होने की बाद की जाएगी। हालांकि, वह किस तारीख को संत बनेंगी, इस बारे में कुछ नहीं बताया जा सका है। इस मामले में कई लोगों ने सुमित और अनामिका के निर्णय का विरोध किया था। कुछ लोगों ने दोनों के इस फैसले के खिलाफ मानवाधिकार आयोग के पास शिकायत भी की। उनका कहना था कि चूंकि उनकी बेटी महज तीन साल की है, इसलिए यह मानवाधिकार का उल्लंघन है। सुमित के रिश्तेदार संदीप राठौड़ ने हमारे सहयोगी अखबार हिन्दुस्तान टाइम्स को बताया कि स्थानीय सरकार के कुछ अधिकारियों ने समुदाय के नेताओं से बात की है। संदीप का कहना है कि वे अनामिका के संत लेने की दीक्षा टलने की वजह से काफी संतुष्ट हैं। वहीं, आरटीआई एक्टिविस्ट कपिल शुक्ला ने कहा कि अनामिका कम से कम तब तक दीक्षा न ले जब तक उसकी बेटी बड़ी न हो जाए।

सैकड़ों लोगों की मौजूदगी में सुमित बने संत

शनिवार को सैकड़ों लोगों की मौजूदगी में सुमित ने संत की दीक्षा ली। इसके लिए उनके बाल को काटा गया और सफेद कपड़ा पहनाया गया। जैन समुदाय के महराज उदय मुनि ने बताया कि यहां धार्मिक आजादी होने की वजह से कोई भी अपने फैसले लेने के लिए स्वतंत्र है। सुमित और अनामिका पिछले कई महीनों से अलग रह रहे थे। दोनों की शादी चार साल पहले हुई थी और उनकी एक बेटी भी है।

संपादकीय

टेररिस्तान पाकिस्तान

जब चोर ही चोरी की गुहार लगाने लगे, तब न सिर्फ चोरी पकड़ी जाती है, वह हास्यास्पद भी बन जाता है। पाकिस्तान के साथ भी ऐसा ही हो रहा है। उसे बार-बार मुंह की खानी पड़ रही है। धमकी देने वाले इस बयान पर कि उसने भारत के लिए सीमित असर वाले छोटे परमाणु बम तैयार कर रखे हैं, अभी वह लानत-मलामत झेल ही रहा था कि संयुक्त राष्ट्र में बड़बोलापन दिखाकर उसने अपनी गर्दन और फंसा ली। पाकिस्तान ने कल्पना भी नहीं की होगी कि उसे यूं अपमानित होना पड़ेगा। संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान के झूठे और अनर्गल प्रलाप की भारत ने जिस तरह पोल-पट्टी खोली, उसे सुनकर पाकिस्तानी प्रतिनिधि भी सकते में दिखे। पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र में जिस तरह कश्मीर का पुराना राग अलापा, उससे यह तो जाहिर हुआ ही कि उसके पास कहने के लिए नया कुछ नहीं है, यह भी जाहिर हुआ कि वह किस तरह झूठ का पहाड़ खड़ा करके सहानुभूति बटोरना चाहता है। अपने देश को आतंकवाद का शिकार बताने वाले पाकिस्तान के कार्यवाहक प्रधानमंत्री शाहिद खाकान अब्बासी के सारे प्रलाप को भारतीय प्रतिनिधि ने झूठ का पुलिंदा साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।जवाब देने के अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हुए भारतीय प्रतिनिधि एनम गंभीर ने जिस तरह मुद्दावार पाकिस्तान की परतें उधेड़ीं, उसके बाद तय है कि पाकिस्तान को अपने यहां भी आलोचना का शिकार बनना पड़ेगा। भारत की यह दो टूक बहुत दूर तक असर करेगी कि जिस देश ने ओसामा बिन लादेन को संरक्षण दिया, जो मुल्ला उमर को अब भी पाल रहा है, वह खुद को किस तरह आतंकवाद से पीड़ित बता सकता है? यूएन में तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश करने और छल-कपट की उसकी कहानियां गढ़ने की आदत की जैसी पोल खुली, उसे उसका हर पड़ोसी जान-समझ चुका है। दरअसल पाकिस्तान की यही बेबसी है, जो अब उसके सच को भी सच मानने से रोकती है। पाकिस्तान अपने छोटे से इतिहास में विकास की अदना सी इबारत भले न गढ़ सका हो, आतंकवाद में उसने हर दिन नई इबारत गढ़ी है। पाकिस्तान को बेनकाब करने के लिए इससे बड़ा सबूत क्या होगा कि जिस लश्कर-ए-तैयबा को संयुक्त राष्ट्र ने आतंकी संगठन घोषित कर रखा है, उसी लश्कर का मुखिया हाफिज सईद अब पाकिस्तान में राजनीतिक दल का नेता बनने की तैयारी कर रहा है। जाहिर है, यह सब उसके पाकिस्तानी आकाओं की मिलीभगत से हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र में भारतीय प्रतिनिधि के शब्द तल्ख थे, पर अंदाज संयत। इसमें गीदड़ भभकियों से न डरने वाले एक देश का आत्म-विश्वास बोल रहा था। इस बार की चेतावनी में कुछ ढका-छिपा नहीं, शब्दों की सीधी मार थी, जब पाकिस्तान को खुले शब्दों में टेररिस्तान का नया नाम मिला, जो साबित कर रहा था कि उसके आतंक की अब कहीं और से तुलना नहीं होगी, न ही वैश्विक आतंकवाद में उसकी भूमिका को झुठलाने के हालात हैं। भारत ने यह भी बता दिया कि पाकिस्तान को अब अपने भविष्य को लेकर चिंतित होने की जरूरत है। यह समझने की जरूरत है कि वह अपनी गीदड़ भभकियों में दुनिया को तबाह करने का इरादा जितनी जल्दी हो त्याग दे, क्योंकि यह न सिर्फ दुनिया के लिए तकलीफदेह है, बल्कि असह्य भी। विश्व समुदाय को संबोधित करते हुए भारतीय प्रतिनिधि के ये शब्द बहुत मारक थे कि पाकिस्तान को अब सिर्फ यह समझाया जा सकता है कि सभ्यता, व्यवस्था, अमन के प्रति प्रतिबद्धता जताए बिना उसे साझा हितों से जुड़े राष्ट्रों के संघ में स्वीकार्यता नहीं मिल सकती। उम्मीद है, पाकिस्तान इन शब्दों के पीछे छिपी मंशा की मजबूती को समझेगा।

ममता को झटका

कलकाता उच्च न्यायालय ने दुर्गा मूर्ति विसर्जन को लेकर जो कुछ टिप्पणियां की हैं वह पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के लिए तीखी निंदा ही है। अगर न्यायालय कह रहा है कि दोनों समुदाय के बीच सद्भाव बने रहने दीजिए तो इसका अर्थ यही निकलता है कि ममता के आदेश को न्यायालय सद्भाव तोड़ने वाला मानता था। वास्तव में ममता ने जिस तरह यह आदेश जारी कर दिया कि मोहर्रम को देखते हुए 30 सितम्बर की शाम 6 बजे से लेकर 2 अक्टूबर की सुबह तक दुर्गा मूर्ति का विसर्जन नहीं किया जाएगा, उससे हिन्दुओं के अंदर गुस्सा का भाव पैदा हुआ था। इसे एक समुदाय के तुष्टिकरण के रूप में देखा जाना भी स्वाभाविक था। आखिर दो समुदाय अपने-अपने पर्व एक साथ क्यों नहीं मना सकते। यदि सुरक्षा की समस्या है तो यह सरकार की जिम्मेवारी थी। किंतु अपनी जिम्मेवारी पूरी करने की जगह आप पर्व को ही रोक दीजिए तो फिर न्यायालय या कहीं उसका समर्थन नहीं मिल सकता। न्यायालय ने कहा भी कि रेगुलेशन यानी नियमन एवं प्रोहिबिशन यानी बंदिश में अंतर होता है। ममता ने पहले की जगह दूसरे विकल्प को अपनाया, जिसका कोई कानूनी आधार नहीं था। यह एक समुदाय के धार्मिक अधिकारों पर चोट भी था। न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया है कि राज्य सरकार मूर्तियों के विसर्जन और मोहर्रम के जुलूस के लिए अलग-अलग रूट तय करे और पुलिस यथोचित सुरक्षा की व्यवस्था करे। यही व्यावहारिक एवं उपयुक्त है। किंतु ममता बनर्जी न्यायालय के निर्णय को सकारात्मक भाव से लेने की जगह साफ नाखुशी जाहिर कर रहीं हैं। वह कह रहीं हैं कि कोई उनकी गर्दन काट ले लेकिन उन्हें अपना सिद्धांत बदलने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। इसका अर्थ क्या है? उन्होंने न्यायालय की आलोचना नहीं की लेकिन अपने निर्णय को अब भी सही ठहरा रहीं है। उन्होंने अब यह फरमान दे दिया है कि विसर्जन के लिए पुलिस की अनुमति लेनी होगी। तो क्या अब लोग पुलिस से विसर्जन की अनुमति लेने जाएंगे और पुलिस कहेगी तो करेंगे? क्या पुलिस के लिए उच्च न्यायालय का आदेश नहीं है? अदालत के आदेश के बाद पुलिस की भूमिका यह तय करने की नहीं रह गई है कि मूर्ति विसर्जन अपनी निर्धारित तिथि को हो या नहीं। उसकी भूमिका केवल विसर्जन बिना किसी हिंसा और बाधा के संपन्न हो जाए ऐसी व्यवस्था करने तक सीमित रह गई है। ममता को इसे समझना चाहिए। यह भी समझना होगा कि जज भी इसी समाज के हैं और उन्हें भी अमन की चिंता होगी।

ज्ञान गंगा/आचार्य सुदर्शन

हमारे रोम-रोम में बसा है अध्यात्म

हमारा देश एक धर्म प्रधान देश है। यही वजह है कि यहां युगों से धर्म की धारा बहती रही है। यहां के धर्मप्राण लोग इसमें डुबकी लगाकर अपना इहलोक और परलोक सुधारते हैं। यदि ध्यान से देखें तो प्राचीनकाल से लेकर अब तक यहां के धर्मप्राण लोगों ने संपूर्ण जीवन को आध्यात्मिक दृष्टि से ही समझने का प्रयास किया है। उदाहरण के लिए आप किसी शहरी श्रमिक को श्रम करते हुए देखें या गांव में हल चलाते किसी हलवाहे को और आप उनसे बात करें तो वह भी बस यही कहते हुए मिलेंगे कि इस जीवन का क्या ठिकाना? आज है, कल नहीं, फिर काहे की चिंता आदि। इस प्रकार यदि देखें तो यहां के लोगों में आध्यात्मिक दृष्टि इस कदर समा चुकी है कि वे बचपन से लेकर जवानी तक और जवानी से लेकर वृद्धावस्था तक केवल और केवल अध्यात्म की बातें करते रहते हैं। ऐसा करके वे अपना इहलोक और परलोक, दोनों सुधार लेना चाहते हैं।

एक गांव की बात है। एक संत वहां के मंदिर में बैठकर पूजा-अर्चना कर रहे थे। वे साधना में ऐसे लीन हो गए कि शाम हो गई और अंधेरा छाने लगा। तभी एक छोटा बच्चा उस मंदिर में आया। उसने जेब से माचिस निकालकर मंदिर में रखे दीपक को जला दिया। मंदिर में प्रकाश देखकर संत ने बच्चे से पूछा, बेटा! यह बताओ कि यहां प्रकाश कहां से आ गया? बच्चे को कोई उत्तर नहीं सूझा, इसलिए उसने फूंक मारकर दीपक बुझा दिया और संत से कहा, हे महात्मन! वह प्रकाश जहां से आया था, वहीं चला गया। संत हतप्रभ रह गए और उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि यह छोटा बच्चा भी मानता है कि सृष्टि में उस परमात्मा की ही शक्ति है जिसने इसकी रचना की है। उस दीपक के प्रकाश की तरह आप सब भी वहीं वापस चले जाएंगे, जहां से आए हैं। प्रभु का स्मरण करते हुए अपने कर्तव्य का निर्वहन करें।

हिंदुत्व के मूल तत्व की न हो अनदेखी

उदय प्रकाश अरोड़ा

अहिंसा, सहिष्णुता, सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुंबकम- ये ऐसे शब्द हैं जो स्वाभाविक रूप से हिंदू धर्म के साथ हमेशा से जुड़ते रहे हैं और आज भी जुड़ते हैं। हिंदू धर्मानुयायियों ने बचपन से ही इन शब्दों को अपने धर्म के पर्याय के रूप में सुना व समझा है। जो विदेशी लोग थोड़ा-सा भी हिंदू धर्म के बारे में जानते हैं, वे भी हिंदू धर्म की उपरोक्त विशेषताओं से परिचित हैं। किंतु हमें तब अफसोस होता है, जब अपने देश के अनेक लोग और यहां तक कि मीडिया के एक हिस्से के लोग भी अक्सर हिंदू आतंकवाद और हिंदू कट्टरवाद जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं।

हिंदू धर्म के साथ ऐसे विशेषणों के प्रयोग देखकर हमें अपने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचार याद आते हैं। गांधीजी ने एक अमेरिकी को 20 अक्टूबर, 1927 को एक लंबा पत्र लिखा था। इस पत्र का एक अंश इस तरह था- 'अध्ययन करने पर जिन धर्मों को मैंने जाना, उनमें हिंदू धर्म को सबसे अधिक सहिष्णु पाया। इसमें सैद्धांतिक कट्टरता नहीं है। यह बात मुझे बहुत आकर्षित करती है, क्योंकि इस कारण इसके अनुयायी को आत्म-अभिव्यक्ति का अधिक से अधिक मौका मिलता है। हिंदू धर्म वर्जनाशील नहीं है। दुनिया के सभी नबी और पैगंबरों की पूजा के लिए इसमें स्थान है। इसीलिए इसके अनुयायी न केवल दूसरे धर्म का आदर कर सकते हैं, बल्कि वे सभी धर्मों की अच्छी बातों को पसंद कर सकते हैं और उन्हें अपना सकते हैं। हिंदू धर्म सभी लोगों को अपने-अपने धर्म के अनुसार ईश्वर की उपासना करने को कहता है। और इसीलिए उसका किसी धर्म से कोई झगड़ा नहीं है। अहिंसा यद्यपि सभी धर्मों में है, किंतु हिंदू धर्म में इसकी उच्चतम अभिव्यक्ति और प्रयोग हुआ है। मैं जैन और बौद्ध धर्म को हिंदू धर्म से अलग नहीं मानता। हिंदू धर्म न केवल सभी मनुष्यों की एकात्मकता में, बल्कि समस्त जीवधारियों की एकात्मकता में विश्वास करता है। मेरी राय में हिंदू धर्म में गाय की पूजा मानवता के विकास की दिशा में उसका एक अनोखा योगदान है। सभी प्रकार के जीवन की पवित्रता में इसके विश्वास का यह व्यवहारिक रूप है। उपरोक्त पत्र से यह स्पष्ट है कि गांधीजी ने जिस चीज को हिंदू संस्कृति की सबसे बड़ी शक्ति माना, वह है अहिंसा। यद्यपि अहिंसा अन्य धर्मों में भी है, किंतु हिंदू धर्म में यह सबसे अधिक बढ़कर है। अहिंसात्मक शक्ति का जितना व्यापक प्रयोग हिंदुस्तान में हुआ है, वैसा दुनिया के किसी और कोने में दिखाई नहीं पड़ता। न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर भी यहां अहिंसा का बखूबी प्रयोग किया गया। इतिहास साक्षी है कि यहूदी, इस्लाम और ईसाई आदि सेमेटिक सभ्यताएं सदैव आपस में लड़ती रहीं। इसके विपरीत भारत ने कभी भी अपनी सेनाएं बाहर लड़ने के लिए नहीं भेजीं। सम्राट अशोक ने अपने दूत दूर-दूर के देशों में अहिंसा और शांति के संदेश के प्रचार के लिए भेजे। अपने एक अभिलेख में अशोक ने लिखवाया था कि जो व्यक्ति अपने धर्म की प्रशंसा और दूसरे की निंदा करता है, वह स्वयं अपने धर्म की सबसे बड़ी हानि करता है।

इस प्रकार के वक्तव्य कि केवल मेरा सत्य ही सही है और दूसरे बिल्कुल गलत हैं, वैमनस्य और हिंसा को जन्म देते हैं। दूसरे भी सही हैं, ऐसे विचार सहिष्णुता, अहिंसा और प्रेमभाव को बढ़ाते हैं। किसी भी विचार के जितने भी पक्ष हो सकते हैं, हिंदू धर्म उन सभी पक्षों के प्रति आदरभाव रखता है। हिंदू धर्म कहता है कि अच्छी सीख जहां से भी मिले, उसे लेने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए।

यह बात सभी को समझनी चाहिए कि 'वसुधैव कुटुंबकम के संदेश को सर्वत्र पहुंचाने वाला हिंदू धर्म जब विश्व स्तर पर अहिंसात्मक शक्ति की बात करता है तो उसका अर्थ है अहिंसात्मक शक्ति द्वारा हिंसा का दमन अर्थात सभी तरह के बैरभाव को पूर्णतः समाप्त करना, शत्रु की बुराई को अपने प्रेम से जीतना और अन्याय के विरुद्ध युद्ध छेड़ना।

अन्याय आज अनेक रूपों में है। दलितों का दमन, किसानों और मजदूरों का शोषण, शक्तिशाली द्वारा निर्बल को दबाना- ये सभी हिंसा और अन्याय के विविध रूप हैं। हिंसा के खिलाफ लड़ाई हिंसा से नहीं की जा सकती। सभी तरह के अन्याय से लड़ने के लिए हिंदू धर्म ने अनेक अहिंसात्मक तरीकों को विकसित किया है। इन अहिंसात्मक तरीकों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है गांधी का सत्याग्रह सिद्धांत, अर्थात सत्य के लिए आग्रह। सत्याग्रह वह हथियार है, जिसके द्वारा कमजोर से कमजोर व्यक्ति भी झूठ और अन्याय के खिलाफ डटकर मुकाबला कर सकता है। केवल व्यक्ति ही नहीं, बल्कि समूह भी और यहां तक कि राष्ट्र भी इस शक्तिशाली हथियार द्वारा अन्याय को खत्म करने की आशा कर सकते हैं, जैसा कि अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा कहते रहते हैं। यह बेहद अफसोस की बात है कि हिंदू धर्म के मूल तत्व अहिंसा को आज चुनौती दी जा रही है। उस पर संदेह किया जा रहा है। आखिर ऐसा क्यों? कोई कह सकता है कि यह सब कुछ धर्मांधता के कारण है, जो इस समय सभी धर्मों के लोगों में दिखाई देती है। यह केवल धर्म के क्षेत्र में ही नहीं, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में भी है। लेकिन हिंदुओं को दूसरों की नहीं, अपनी चिंता करनी चाहिए। हिंदू तो कभी उग्र नहीं थे, कभी भी कट्टरपंथी नहीं थे। उग्रता, कट्टरपन और धर्मांधता से हिंदुत्व का विरोधाभास रहा है। अहिंसा और सहिष्णुता के बिना हिंदू धर्म की कल्पना ही नहीं की जा सकती। सत्य, अहिंसा और 'वसुधैव कुटुंबकम का संदेश भारत ने दुनिया को दिया है। इसलिए सबसे पहली बात तो यह होनी चाहिए कि उग्रवाद, आतंकवाद और कट्टरवाद जैसे शब्द हिंदू धर्म के साथ न जोड़े जाएं, क्योंकि यह हिंदू धर्म की मूल भावना के खिलाफ है। पिछले दिनों कुछ ऐसी घटनाएं घटी हैं, जब विवेकशून्य उत्तेजित भीड़ ने गोरक्षा के नाम पर हत्याएं की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित सभी ने इन घटनाओं की भर्त्सना की। समाज का यह कर्तव्य बनता है कि कोई भी संगठन या व्यक्ति जो हिंसक विचारधारा या कार्यों को बढ़ावा देते हुए स्वयं को हिंदू धर्म का रक्षक घोषित करता है, उसे हिंदू समाज से तुरंत बहिष्कृत किया जाए। धर्म के बारे में जोर-जबर्दस्ती का हिंदू धर्म सख्त विरोध करता है। हिंदू धर्म की यह खासियत रही है कि जब कभी कुप्रथाएं और बुराइयां उस पर हावी हुईं, तो धार्मिक-सामाजिक सुधारकों ने उनके खिलाफ आवाज उठाई। इन सुधारकों और संतों ने लकीर का फकीर होने से समाज को बचाया। समय बदलने के साथ धर्मग्रंथों की पुनर्व्याख्या की गई। दुर्भाग्य की बात है कि आजादी के बाद ढोंगी बाबाओं और मठाधीशों का अधिक प्रभाव बढ़ा। उन्होंने धर्म के नाम पर अपार संपत्ति जमा की। आज हिंदू धर्म को ऐसे पाखंडियों से बचाने की जरूरत है। यह एक वैचारिक क्रांति से ही संभव है। इसमें मीडिया, सहिष्णु हिंदू संगठन और संत समुदाय महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। नए भारत का निर्माण तभी संभव है, जब हम वैज्ञानिक सोच वाले एक तार्किक, विवेकशील, मानवतावादी और अहिंसा में विश्वास रखने वाले समाज की रचना करेंगे।

> " धर्म के बारे में जोर-जबर्दस्ती का हिंदू धर्म सख्त विरोध करता है। हिंदू धर्म की यह खासियत रही है कि जब कभी कुप्रथाएं व बुराइयां उस पर हावी हुई, तो धार्मिक-सामाजिक सुधारकों ने उनके खिलाफ आवाज उठाई। नए भारत का निर्माण तभी संभव हैस जब हम एक वैज्ञानिक सोच वाले तार्किक, मानवतावादी और आहिंसा में विश्वास रखने वाले समाज की रचना करेंगे। "

प्रसंगवश

जीने की चुनौती

गिरीश्वर मिश्र

आज सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी हमारे जीवन के हर पहलू को बेरोकटोक छूती जा रही है। इसकी चाही-अनचाही घुसपैठ के साथ हमारी जिंदगी में कामों की नई श्रृंखला पैदा हो रही है, और पुराने कामों का स्वरूप भी बदल रहा है। इन सब के सूत्रधार कंप्यूटर महाशय हैं, जिनका हमारे परिवेश में अवतरण कई रूपों में हुआ है। परंतु सबका आधार कृत्रिम बुद्धि (आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस) की व्यवस्था है, जिससे तरह-तरह की समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। स्थिति यह है कि सिर्फ अध्ययन-अनुसंधान ही नहीं देशों की अर्थव्यवस्था और सामरिक शक्ति सब कुछ उस देश की कंप्यूटर के क्षेत्र में काबिलियत पर निर्भर करने लगी है।कंप्यूटर की शब्दावली का दम-खम अद्भुत है। मसलन, ''डाउन लोड' और ''अपलोड' करना (जिसका हिंदी अनुवाद ''उतारना' ''चढ़ाना' होगा), ऐसी क्रियाएं हैं, जो क्षण भर में व्यक्ति को सारी दुनिया से जुड़ने और जोड़ने की शक्ति रखती है। आप सूचना के साथ लॉक, सेलेक्ट, ट्रैक, डिलीट, कॉपी, पेस्ट, शेयर, फ्लिप, जूम कुछ भी आसानी से कर सकते हैं। सच्चाई यही है कि कंप्यूटर का दखल का क्षेत्र दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। ज्ञान, खेलकूद, देशाटन, स्वास्य, बाजार की खरीद-फरोख्त और नागरिक सुविधाएं आदि से जुड़े सारे प्रश्नों का जवाब और समस्याओं का समाधान इसी की सहायता से मिलने लगा है। इसके चलते कई नये व्यवसाय भी पैदा हो रहे हैं। जीवन व्यापार में सूचना की यह अभूतपूर्व उपस्थिति हम सबके जीवन में गजब ढा रही है। सूचना का अतिरेक और उसकी सरल उपलब्धता आदमी को शायद विराटता का भी बोध कराती है पर साथ ही साथ जीती-जागती दुनिया से काट कर अकेला भी करती जाती है। आज प्रायः परिवार में हर सदस्य के पास सूचना तंत्र से जुड़ने की अपनी-अपनी स्वतंत्र व्यवस्था रहती है । एंड्रायड मोबाइल तमाम सुविधाओं वाला होता है। कंप्यूटर भी आसानी से उपलब्ध हो रहा है। सूचना के इस संसार में हर तरह की सूचनाएं हैं, और इस बात की पूरी छूट रहती है कि अच्छी-बुरी, नैतिक-अनैतिक कौन-सी सूचना चुनी जाए और किसके साथ कितना जुड़ा जाए। सब कुछ कागज से उठाकर इस सूचना तंत्र के हवाले कर देने के अपने खतरे भी हैं। सूचना की तस्करी भी है, और डकैती (हैकिंग) भी चल रही है। निजी व्यक्तिगत जीवन में सूचना-व्यसन कितना घातक हो सकता है, यह पिछले दिनों ब्लू ह्वेल गेम के सिलसिले में हुई दुर्घटनाओं से समझा जा सकता है। किस तरह वर्चुअल रिएलिटी (आभासी/भ्रामक सच की दुनिया) आदमी को बांध कर क्या-क्या करने को प्रेरित करती है, या कर सकती है, इसका यह त्रासद नमूना है। जो रपटें अखबारों में छपी हैं, और विवरण सामने आए हैं, वे किसी यंत्र-मंत्र के वशीकरण से कम नहीं लगते। जो आधे-अधूरे ब्योरे सामने आए हैं, उनके आधार पर पर किसी स्पष्ट और सामान्य निष्कर्ष तक पहुंचना मुश्किल है। फिर भी इस तरह की घटना से लगता यही है कि सूचना का खेल निराला है। वह कुछ भी करा सकता है। दूर देश से सूचना मार्ग से नियंत्रित ब्लू ह्वेल का खेल किस तरह बच्चों को बांधता है, और उन्हें कुछ भी करने को बाध्य कर देता है। ये बच्चे नेट पर खेल से जुड़ते हैं, सूचना पाते हैं, आकर्षित होते हैं, और निर्देशों के हिसाब से दिए काम को अंजाम देते हैं, जिसका चरम कार्य मौत को गले लगाना होता है। निश्चय ही ''थ्रिल' भी इस खेल का एक पक्ष है। उसे अपने अनुभव में लाकर महसूस करना क्षणिक ही सही बेहद उत्तेजक होता है। इस हद तक कि अंजाम का अर्थ समझने और उस पर विचारने की फुर्सत ही नहीं बचती। नये से नये तरीकों को आजमाना और उनका तजुरबा ''सेंसेशन सीकिंग' की प्रवृत्ति को झलकाता है, जो आज बढ़ रही है।अपने-अपने सूचना संसार में खोए परिवार के सदस्य बच्चों के लिए सजीव सक्रिय रूप से कम उपलब्ध रहते हैं। वैसे भी विकसित होते समाज में अकेले निजीपन के अंधेरे-उजाले ही बढ़ रहे हैं। आत्मलीन सभ्यता का स्वप्न व्यक्ति का उत्कर्ष है। उसकी मर्जी! वह जैसे चाहे रहे, जिए, मरे उसकी बला से। पर यह खाम खयाली अंततः बेहद खतरनाक है। सूचना का तंत्र और उसका उपयोग सकारात्मक और उपयोगी होना चाहिए। परिवार के स्तर पर उसका संतुलित उपयोग कैसे किया जाए, विचारना होगा। समझना होगा कि परिवार और समाज की ओर उन्मुख जीवन व्यक्ति के विरु द्ध नहीं होता। दोनों की पारस्परिकता को ग्राह्य बनाना होगा।

मुद्दा

धर्म सचमुच व्यक्तिगत मामला है?

> बहुत कम लोग अपनी धार्मिक पहचान से मुक्त हो पाते हैं। सिगमंड फायड ने स्वीकार किया है कि वे अपनी यहूदी जड़ों को मिटा नहीं पाए। गांधी जी बार-बार कहते थे कि मैं जितना हिंदू हूं, उतना ही मुसलमान और उतना ही ईसाई हूं। लेकिन अंत तक रहे वे हिंदू ही। हालांकि यह भी सच है कि मानवता का भविष्य धर्म से नहीं, विज्ञान से तय होगा, क्योंकि धर्म में मेधा का सहज और उन्मुक्त प्रवाह नहीं दिखाई देता, जो विज्ञान की मूल विशेषता है

सेकुलर लोगों द्वारा अक्सर कहा जाता है कि धर्म व्यक्तिगत मामला है। कुछ विद्वानों ने इस बात को इस तरह कहा है कि धर्म व्यक्ति और ईर के बीच का मामला है। निश्चय ही कोई व्यक्ति किस धर्म को मानता है, यह उसके अपने अंतःकरण पर निर्भर है। लेकिन दुनिया में कितने लोग स्वेच्छा से धर्म को चुनते हैं? व्यक्ति धर्म को चुने, इसके पहले ही धर्म उसे चुन लेता है। निःसंदेह कुछ लोग अपनी पसंद के धर्म में जाने के लिए धर्म परिवर्तन करते हैं, लेकिन किसी भी युग में ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम होती है, पूरे धार्मिक जमात का दशमलव एक प्रतिशत भी नहीं। बाकी लोग धर्म का चुनाव नहीं करते। जिस धर्म में जन्मते हैं, उसी में जीवन बिताते हैं, और उनका अंतिम संस्कार भी उसी धर्म के विधि-विधान के अनुसार होता है। वस्तुतः धर्म की समस्या ही यह है कि वह तर्क नहीं, आस्था का विषय है। जो व्यक्ति ईर में विास करना चाहता है, वह यह पता लगाने की कोशिश नहीं करता कि ईर है भी या नहीं। इसका कारण है। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर ईर की खोज करने निकले तो हो सकता है कि इसी में उसका आधे से ज्यादा जीवन व्यतीत हो जाए। यह सही है कि प्रत्येक व्यक्ति के मन में कभी न कभी जिज्ञासा पैदा होती है कि सृष्टि क्या है, क्यों है, क्या इसका कोई निर्माता है और नहीं है तो यह अस्तित्व में कैसे आई, इसका संचालन कौन करता है, जीवन का उद्देश्य क्या है, या इसका कोई उद्देश्य है भी या नहीं। लेकिन ये कठिन प्रश्न हैं, और निश्चित नहीं है कि इनका उत्तर है भी या नहीं। दूसरी तरफ, जीवन में इतना आकर्षण होता है, उसके तात्कालिक दबाव इतने गुरु तर होते हैं कि जीवन को तब तक के लिए स्थगित नहीं किया जा सकता, जब तक इन जिज्ञासाओं का समाधान नहीं हो जाता। यहीं धर्म शक्तिशाली सिद्ध होता है। हमारी विचारशीलता पर हावी हो जाता है। धर्म व्यक्तिगत मामला होता तो जितने व्यक्ति हैं, उतने ही धर्म होते। इस बात की व्याख्या हमारे समय के सबसे बड़े धार्मिक महात्मा गांधी ने बहुत अच्छी तरह की है। उन्होंने अनेक बार ईर के गुणों का वर्णन किया, लेकिन यह भी स्वीकार किया है कि उन्होंने ईर के दर्शन नहीं किए हैं। पहले वे कहते थे कि ईर सत्य है, परंतु बाद में कहने ही नहीं लगे, बल्कि इस पर जोर देने लगे कि सत्य ही ईर है। गांधी के अनुसार, सत्य क्या है? जो कुछ है, वह सत्य है। इसका अर्थ निकलता है कि पूरी सृष्टि ही सत्य है। दूसरी ओर, धर्म वह है, जो हमें ईर से मिलाता है। लेकिन ईर की तरफ जाने का कोई एक रास्ता नहीं है। इसलिए धर्म भी अनेक होंगे। इस पहेली को हल करते हुए, लेकिन गांधी जी ने इस पर भी जोर दिया कि सभी धर्मों में एक बुनियादी एकता है। यह एकता कहां से पैदा है? जाहिर है, सभी मनुष्यों की बाह्य और आंतरिक बनावट में भी एक मूलभूत एकता है। फिर विभिन्न धार्मिक समुदायों में संघर्ष क्यों होता है? इस प्रश्न का उत्तर खोजते हुए हमारा साक्षात्कार इस सचाई से होता है कि धर्म सिर्फ आत्मिक या आध्यात्मिक मामला नहीं है, इसके भौतिक आधार भी होते हैं। किसी एक धर्म को मानने वाले लोगों की जीवन पद्धति में बहुत कुछ साझा होता है। इस तरह धर्म व्यक्ति की पहचान बन जाता है और इस पहचान के साथ घर-परिवार, संपत्ति, जमीन, नागरिकता, शासन आदि जुड़ जाते हैं। जब दो धर्मों के लोगों के भौतिक स्वार्थ टकराते हैं, तब जो लड़ाई शुरू होती है, उसका आधार धर्म को ही बनाया जाता है, क्योंकि इससे लोगों को लामबंद करने में सुविधा होती है। दोनों ओर के गरीब और वंचित लोग भी इस लड़ाई में शामिल हो जाते हैं। चूंकि धर्म का संबंध तर्क से कम, आस्था से ज्यादा होता है, इसलिए जड़ता या स्थिरता सभी धर्मों का प्रधान तत्व बन जाती है। कोई किताब, कोई आचार्य, कोई पीठ तय करता है कि हमारा धर्म क्या है यानी हमें किस तरह रहना चाहिए। लेकिन सभी धर्मों की सामान्य खूबी यह है कि इस मामले में अंतिम रेखा पहले ही खींच दी जाती है। जो भी धार्मिक सत्ता है-पैगंबर, किताब या शास्त्र-वह आखिरी होती है। नया पैगंबर नहीं आ सकता, नई किताब नहीं लिखी जा सकती, नये शास्त्रों की रचना नहीं हो सकती। लेकिन रूढ़िबद्ध जीवन मनुष्य के स्वभाव में नहीं है। वह रूढ़ियों का पालन करता है, तो रूढ़ियों से विद्रोह भी। इसी प्रक्रिया में नये धर्मों या नये संप्रदायों का जन्म होता है। ईसा मसीह जन्म से यहूदी थे। गौतम बुद्ध जन्म से हिंदू थे। दयानंद सरस्वती आर्यसमाजी परिवार में पैदा नहीं हुए थे। लेकिन इन सभी ने एक नये धर्म की धारा बहाई। धर्म के उत्तर में वैज्ञानिक चिंतन और जीवन-पद्धति का विकास हुआ है। लेकिन इनमें अभी भी वह शक्ति नहीं आ पाई है कि वे सामूहिक जीवन का आधार बन सकें। बहुत कम लोग अपनी धार्मिक पहचान से मुक्त हो पाते हैं। सिगमंड फायड ने स्वीकार किया है कि वे अपनी यहूदी जड़ों को मिटा नहीं पाए। गांधी जी बार-बार कहते थे कि मैं जितना हिंदू हूं, उतना ही मुसलमान और उतना ही ईसाई हूं। लेकिन अंत तक रहे वे हिंदू ही। हालांकि यह भी सच है कि मानवता का भविष्य धर्म से नहीं, विज्ञान से तय होगा, क्योंकि धर्म में मेधा का सहज और उन्मुक्त प्रवाह नहीं दिखाई देता, जो विज्ञान की मूल विशेषता है।

सरकार 500 करोड़ रुपये में बनाएगी स्क्रैप आधारित पांच इस्पात संयंत्र

नई दिल्ली। सरकार एक साल के भीतर पांच सौ करोड़ रुपये के निवेश से कबाड़ (स्क्रैप) आधारित पांच इस्पात संयंत्र बनाने की योजना बना रही है। उसका उद्देश्य देश के लाक्षित 30 करोड़ टन इस्पात उत्पादन का अहम हिस्सा स्क्रैप से हासिल करना है। इस्पात सचिव अरुणा शर्मा ने बताया, ''12.6 करोड़ टन से बढ़ाकर 30 करोड़ टन इस्पात का उत्पादन हमारा लक्ष्य है। इसमें सारा नये लौह अयस्कों से उत्पादित नहीं होगा।

यह कबाड़ से भी तैयार होगा।'' उन्होंने प्रत्येक संयंत्र में सौ-सौ करोड़ रुपये के निवेश की बात बताते हुए कहा, ''एक साल के भीतर पांचों संयंत्र तैयार हो जाएंगे।'' शर्मा ने कहा कि पूरे स्क्रैप का इस्तेमाल इस्पात तैयार करने में किया जाएगा। वर्ष 2030 तक करीब तीन-चार करोड़ टन इस्पात स्क्रैप से बनाया जाएगा। '' सचिव ने बताया कि ऐसा पहला संयंत्र उत्तर प्रदेश के नोएडा में अगले महीने बनेगा। उन्होंने कहा, ''नोएडा के बाद हम दक्षिण भारत में शुरू करेंगे। उसके बाद पश्चिम भारत, फिर मध्य भारत और अंत में उत्तर भारत में एक और संयंत्र बनाया जाएगा।'' पहले ऐसे संयंत्र को तौर करने के लिए स्क्रैप का कारोबार करने वाली सार्वजनिक कंपनी एमएसटीसी ने महिंद्रा इंटरट्रेड के साथ संयुक्त उपक्रम बनाने का करार किया है।

शर्मा ने कहा, ''अभी संयुक्त उपक्रम एमएसटीसी और महिंद्रा के बीच है। दक्षिण भारत के संयंत्र के लिए हुंदै ने दिलचस्पी दिखायी है। तब वह भी उसी समूह में शामिल हो जाएगी। हम जो कह रहे हैं वह ये कि अभी यह एमएसटीसी महिंद्रा संयुक्त उपक्रम है और कोई भी इसमें शामिल हो सकता है।'' उल्लेखनीय है कि देश में सालाना 50-60 लाख टन स्क्रैप की जरूरत है जिसे आयात के जरिये पूरा किया जाता है।

सेबी ने 14 और इकाइयों से प्रतिबंध हटाया

नयी दिल्ली। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने 14 इकाइयों से प्रतिभूति बाजार में कारोबार करने की रोक हटा दी है। इन इकाइयों पर कथित रूप से कर चोरी तथा मनी लांड्रिंग गतिविधियों के लिए शेयर बाजार प्लेटफार्म का दुरुपयोग करने के लिए प्रतिबंध लगाया गया था। नियामक ने कहा कि इन इकाइयों के खिलाफ किसी तरह का प्रतिकूल प्रमाण नहीं मिला है जिसके बाद प्रतिबंध हटाने का फैसला किया गया है। सेबी ने यह आदेश कमललक्षी फाइनेंस कारपोरेशन (केएफसीएल) के मामले में दिया है। इन इकाइयों को प्रथम दृष्टया अनुचित लाभ के लिए कंपनी के शेयरों मूल्यों को कृत्रिम तरीके से बढ़ाने का जिम्मेदार माना गया था।इस महीने नियामक ने अभी तक धोखाधड़ी वाले तरीके से दीर्घावधि का लाभ कमाने (एलटीसीजी) के विभिन्न मामलों में कुल 750 इकाइयों से प्रतिबंध हटाया है। ताजा केएफसीएल (अब ग्रोमो ट्रेड एंड कंसल्टेंसी लि.) के मामले में सेबी ने फरवरी, 2015 में 33 इकाइयों पर प्रतिभूति बाजार में कारोबार की रोक लगाई थी। बाद में अगस्त, 2016 में दो इकाइयों से प्रतिबंध हटा दिया गया। सेबी ने जनवरी से दिसंबर, 2014 के दौरान केएफसीएल के शेयरों के मूल्यों की समीक्षा की थी। सेबी के 22 सितंबर के ताजा आदेश में कहा गया है कि इन 14 इकाइयों के खिलाफ किसी तरह का प्रतिकूल प्रमाण नहीं मिला। इसलिए इनसे प्रतिबंध हटाया जा रहा है। शेष 17 इकाइयों पर प्रतिबंध जारी रहेगा।

आठ शीर्ष कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 54,539 करोड़ रुपये घटा

नयी दिल्ली। सेंसेक्स की शीर्ष दस कंपनियों में से आठ के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में बीते सप्ताह 54,539.2 करोड़ रुपये की गिरावट आई। सबसे अधिक नुकसान में रिलायंस इंडस्ट्रीज रही। सप्ताह के दौरान सिर्फ टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) तथा एचडीएफसी के बाजार पूंजीकरण में इजाफा हुआ। एचडीएफसी बैंक, आईटीसी और हिंदुस्तान यूनिलीवर सहित शेष आठ कंपनियों के बाजार पूंजीकरण में गिरावट आई। समीक्षाधीन सप्ताह में रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार पूंजीकरण 30,897.71 करोड़ रुपये घटकर 5,17,686.07 करोड़ रुपये रह गया। भारतीय स्टेट बैंक के बाजार पूंजीकरण में 8,761.53 करोड़ रुपये की गिरावट आई और यह 2,26,073.40 करोड़ रुपये पर आ गया। एचडीएफसी बैंक का बाजार मूल्यांकन 6,272.79 करोड़ रुपये के नुकसान से 4,70,988.04 करोड़ रुपये रहा। ओएनजीसी की बाजार हैसियत 3,144.15 करोड़ रुपये घटकर 2,11,042.55 करोड़ रुपये रह गई। इन्फोसिस का बाजार मूल्यांकन 2,422.98 करोड़ रुपये घटकर 2,06,279.56 करोड़ रुपये रह गया। सप्ताह के दौरान आईटीसी का बाजार पूंजीकरण 1,339.83 करोड़ रुपये के नुकसान से 3,26,736.72 करोड़ रुपये रह गया। हिंदुस्तान यूनिलीवर का बाजार मूल्यांकन 1,287.87 करोड़ रुपये कम होकर 2,68,297.84 करोड़ रुपये पर आ गया। मारुति सुजुकी की बाजार हैसियत 412.34 करोड़ रुपये घटकर 2,43,916.05 करोड़ रुपये पर आ गई।

उज्बेकिस्तान से यूरेनियम खरीदेगा भारत

नयी दिल्ली (एजेंसी)।

भारत अपनी दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से रणनीतिक यूरेनियम भंडार तैयार करने की अपनी योजना के तहत परमाधु ईंधन हासिल करने के लिए उज्बेकिस्तान समेत कई देशों से बातचीत कर रहा है। भारत अपने रणनीतिक यूरेनियम भंडार के लिए इतना परमाणु ईंधन जुटाना चाहता है जिससे अगले पांच साल देश के रिएक्टर चल सकें और यूरेनियम की कमी के चलते उन्हें बंद न होना पड़े।

अतीत में 1974 में पोखरण परमाणु परीक्षणों के बाद लगे प्रतिबंधों के चलते भारतीय परमाणु रिएक्टर यूरेनियम की कमी के चलते अपनी पूरी क्षमता के हिसाब से काम नहीं कर रहे थे। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने बताया कि उज्बेकिस्तान के साथ बातचीत चल रही है। पिछले महीने इस मुद्दे पर विस्तार से चर्चा करने के लिए उज्बेकिस्तान का एक प्रतिनिधिमंडल भारत आया था। विदेश मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने पहचान उजागर नहीं करने की शर्त पर बताया कि जून में अस्ताना में शंघाई सहयोग संगठन के सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उज्बेक राष्ट्रपति शौकत मिर्जियोव की द्विपक्षीय मुलाकात के बाद इस प्रतिनिधिमंडल की भारत यात्रा हुई।

उन्होंने बताया कि हमने पहले भी उज्बेकिस्तान से यूरेनियम आयात करने कोशिश की। तब उसने यूरेनियम देने से इनकार कर दिया था। अब वह निर्यात करने पर सहमत हो गया है और बातचीत चल रही है। 'वर्ल्ड न्यूक्लीयर एसोसिएशन' के अनुसार उज्बेकिस्तान दुनिया में यूरेनियम का सातवां सबसे बड़ा निर्यातक देश है। एसोसिएशन वैश्विक परमाणु उद्योग के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है। आस्ट्रेलिया से भी यूरेनियम हासिल करने की कोशिश चल रही है। दोनों देशों के बीच परमाणु सहयोग संधि 2014 में हुई और 2015 में प्रभाव में आई।

बहरहाल, एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने इंगित किया कि आस्ट्रेलियाई यूरेनियम प्रकृति में 'अशुद्ध' है। अधिकारी ने कहा, ''हमें आस्ट्रेलिया से करीब एक किलोग्राम यूरेनियम मिला है। यूरेनयिम का दाम तय करने के लिए हैदराबाद के 'न्यूक्लीयर फ्यूएल कॉम्प्लेक्स' में इस सैंपल का परीक्षण किया जा रहा है। हमें आशा है कि अगले साल यूरेनियम का आयात शुरु होगा।

भारत-कोरिया व्यापार और निवेश बढ़ाने के लिए रणनीतिक समूह गठित

नयी दिल्ली (एजेंसी)।

दक्षिण कोरिया के साथ वृहद आर्थिक सहयोग के मद्देनजर दोनों देशों के बीच व्यापार एवं निवेश को बढ़ाने के लिए एक संयुक्त समिति गठित की गयी है, ताकि अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों की पहचान की जा सके। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री सुरेश प्रभु ने इसकी जानकारी दी। वह अभी एशिया-यूरोप आर्थिक मंत्रियों की बैठक में भाग लेने दक्षिण कोरिया गये हुए हैं। उन्होंने भारत-कोरिया विस्तृत आर्थिक भागीदारी अनुबंध की तीसरी मंत्रिस्तरीय समीक्षा में भी भाग लिया।

उन्होंने कई ट्वीट कर बताया कि दोनों देशों के बीच रणनीतिक भागीदारी मजबूत करने की काफी संभावनाएं विद्यमान हैं। उन्होंने कहा, ''हमें बातचीत को अधिक उद्देश्यपूर्ण तरीके से आगे बढ़ाने के लिए द्विपक्षीय व्यापार के लिए मात्रात्मक लक्ष्य तय करने होंगे। मैं दक्षिण कोरिया के पूरे कारोबारी प्रतिनिधिमंडल को भारत आमंत्रित करता हूं।'' उन्होंने आगे कहा, ''जब तक दोनों देशों के कारोबार आपस में भागीदार नहीं बनते हैं, किसी द्विपक्षीय अनुबंध का पूरा लाभ नहीं निकलेगा। आइये हम दूरगामी प्रौद्योगिकी पर आधारित भागीदारी बनाते हैं।'' प्रभु ने कहा कि अगले 7-10 साल में भारत 5,000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा और यह दक्षिण कोरिया जैसे देशों के साथ संबंधों के दम पर होगा। उल्लेखनीय है कि वित्त वर्ष 2016-17 में दोनों देशों का द्विपक्षीय व्यापार बढ़कर 16.57 अरब डॉलर पर पहुंच गया था, जो इससे पिछले वित्त वर्ष में 16.57 अरब डॉलर था।

अगस्त में मारुति की डिजायर ने आल्टो को पछाड़ा

नयी दिल्ली (एजेंसी)।

नए अवतार में मारुति सुजुकी की कॉम्पैक्ट सेडान डिजायर अगस्त में पहली बार देश में सबसे ज्यादा बिकने वाली कार बन गई। उसने मारुति की ही आल्टो को पीछे छोड़ा। वाहन विनिर्माताओं के संगठन सियाम के ताजा आंकड़ों के अनुसार अगस्त में दस सबसे अधिक बिकने वाले यात्री वाहनों में से सात मारुति सुजुकी इंडिया के हैं। शेष तीन मॉडल हुंदै मोटर इंडिया के हैं। मारुति सुजुकी की नई डिजायर इस साल मई में उतारी गई थी।

अगस्त में इसकी 26,140 इकाइयां बिकीं। माह के दौरान आल्टो की बिक्री 21,521 इकाई रही। पिछले एक दशक से आल्टो देश में सबसे ज्यादा बिकने वाली कार रही है। पिछले साल अगस्त में डिजायर के पुराने संस्करण की बिक्री 15,766 इकाई रही थी, वहीं आल्टो की 20,919 इकाइयां बिकी थीं। इस साल अगस्त में दस सबसे अधिक बिकने वाले मॉडलों में मारुति की प्रीमियम हैचबैक बलेनो 17,190 इकाई के साथ तीसरे स्थान पर रही। पिछले साल समान महीने में कंपनी ने इसकी 8,671 इकाइयां बेची थीं। चौथा स्थान कॉम्पैक्ट एसयूवी विटारा ब्रेजा का रहा। इसकी बिक्री 14,396 इकाई की रही। पिछले साल अगस्त में यह आठवें स्थान पर थी। इसकी बिक्री 9,554 इकाई रही थी। कंपनी की कॉम्पैक्ट कार वैगन आर 13,907 इकाइयों के साथ पांचवें स्थान पर रही।

अगस्त, 2016 में यह 14,571 इकाइयों के साथ तीसरे स्थान पर रही थी। मारुति की ही स्विफ्ट बिक्री के लिहाज से छठे स्थान पर रही। कंपनी ने अगस्त में स्विफ्ट की 12,631 इकाइयां बेचीं। एक साल पहले यह 13,027 इकाई के आंकड़े के साथ चौथे स्थान पर थी। मारुति की प्रमुख प्रतिद्वंद्वी हैचबैक ग्रैंड आई10 सातवें स्थान पर रही। इसकी 12,306 इकाइयों की बिक्री हुई। पिछले साल अगस्त में ग्रैंड आई10 की बिक्री 12,957 इकाई रही थी। कंपनी की प्रीमियम हैचबैक एलीट आई 20 आठवें स्थान पर रही। अगस्त में कंपनी ने इसकी 11,832 इकाइयां बेचीं।

एसयूची क्रेटा 10,158 इकाइयों की बिक्री के आंकड़े के साथ नौवें स्थान पर रही। मारुति सुजुकी की सेलेरियो 9,210 इकाइयों की बिक्री के साथ दसवें स्थान पर रही। रेनो की क्विड इस बार शीर्ष दस की सूची में स्थान बनाने में कामयाब नहीं रही। पिछले साल अगस्त में यह दस सबसे अधिक बिकने वाले मॉडलों में थी।

प्रधानमंत्री सोमवार को ओएनजीसी की नई इमारत का उद्घाटन करेंगे

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ओएनजीसी) का नया कॉरपोरेट कार्यालय का सोमवार को उद्घाटन करेंगे। इसका नाम बदलकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऊर्जा भवन रखा गया है। पहले इसका नाम राजीव गांधी ऊर्जा भवन था। भव्य हरित इमारत पर 600 करोड़ रुपये का खर्च आया है। यह भवन एक साल पहले बना और यह देश की सबसे बड़ी तेल एवं गैस उत्पादक ओएनजीसी और उसकी विदेश इकाई ओएनजीसी विदेश लि. का कॉरपारेट कार्यालय है। कंपनी सूत्रों ने बताया कि मोदी शाम संघ विचारक दीन दयाल उपाध्याय की प्रतिमा का अनावरण करेंगे और ओएनजीसी के कर्मचारियों को संबोधित करेंगे। सरकार का संघ परिवार के विचारक का जन्म शताब्दी समारोह कार्यक्रम 25 सितंबर को समाप्त हो रहा है। ओएनजीसी वसंत कुंज स्थित इस नये दफ्तर में पिछले साल गयी और प्रतिमा पिछले सप्ताह परिसर में लगायी गयी। ओएनजीसी ने फरवरी में कहा था कि तत्कालीन प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने 20 अगस्त, 2007 को राजीव गांधी ऊर्जा भवन की आधारशिला रखी थी। 20 अगस्त पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत राजीव गांधी की जयंती है। लेकिन अक्तूबर 2016 में इमारत का नाम बदल दिया गया। कंपनी ने कहा था कि चेयरमैन और प्रबंध निदेशक दिनेश के सर्राफ की अध्यक्षता में कार्यकारी समिति का मानना है कि इस साल पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जयंती वर्ष है। यह महान दार्शनिक को एक सम्मान होगा। इस वजह से इमारत का नाम बदला गया।

सुब्रमणियम को मिलेगा एक साल का सेवा विस्तारः जेटली

नई दिल्ली (एजेंसी)।

वित्त मंत्री अरुण जेटली ने आज कहा कि सरकार मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) अरविंद सुब्रमणियम का कार्यकाल एक साल बढ़ाएगी। वह अक्टूबर 2018 तक मुख्य आर्थिक सलाहकार के पद पर बने रहेंगे। उनका मौजूदा कार्यकाल अगले महीने समाप्त हो रहा है। पीटरसन इंस्टीट्यूट फार इंटरनेशनल एकोनामिक्स के वरिष्ठ फेलो सुब्रमणियम को अक्तूबर 2014 में मुख्य आर्थिक सलाहकार बनाया गया था।

उनका कार्यकाल तीन साल के लिये था जो 16 अक्टूबर 2017 को समाप्त हो रहा है। जेटली ने आज यहां संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि सुब्रमणियम को एक साल का सेवा विस्तार मिलेगा। केन्द्र की भाजपा नीत राजग सरकार का पांच साल का कार्यकाल मई 2019 में पूरा होगा। सूत्रों के अनुसार सभी प्रक्रियाएं पूरी होने के बाद इस बारे में औपचारिक घोषणा की जाएगी।

सीईए वित्त मंत्री को वृहत आर्थिक मामलों पर सलाह देता है और अन्य बातों के अलावा आर्थिक समीक्षा तथा मध्यावधि समीक्षा तैयार करता है। सरकार के निर्णय के बाद सुब्रमणियम ने कहा कि अर्थव्यवस्था कई चुनौतियों का सामना कर रही है और इससे विभिन्न मोर्चों पर निपटने की जरूरत है।

उन्होंने कहा, हमारे समक्ष कई चुनौतियां हैं। आर्थिक वृद्धि धीमी पड़ रही है और निवेश नहीं बढ़ रहा है। इसीलिए हमें वृहद आर्थिक स्थिरता बनाए रखते हुए एक साथ कई मोर्चों .... जैसे कि विनिमय दर, सार्वजनिक निवेश... पर इससे निपटना होगा

उन्होंने कहा कि बैंकों के फंसे कर्ज की समस्या भी प्रमुख चिंता का विषय है। सुब्रमणियम का कार्यकाल एक साल बढ़ाए जाने के सरकार के निर्णय के तुरंत बाद उनका यह बयान आया है। रुपए में मजबूती पर सुब्रमणियम ने कहा कि सभी उभरती अर्थव्यवस्थायें इस समस्या का सामना कर रही हैं। पूंजी प्रवाह बढ़ने से विनिमय दर पर दबाव बढ़ा है।

सुब्रमणियम ने दिल्ली के सेंटस्टीफंस कॉलेज से स्नातक की डिग्री हासिल की और भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद से एमबीए की डिग्री हासिल की। उन्होंने एमफिल और डिफिल की डिग्री ब्रिटेन के आक्सपोर्ड विश्वविद्यालय से हासिल की। उन्हें अलग हटकर कई विचार देने का श्रेय जाता है।

इसमें सभी को एक निश्चित आय (यूनवर्सल बेसिक इंकम-यूबीआई) उपलब्ध कराने का विचार शामिल है। इसको लेकर सरकार के भीतर और बाहर काफी बहस हुई।

प्रोत्साहन पैकेज पर मुख्य आर्थिक सलाहकार सुब्रमणियम ने कहा कि इस पर काम किया जा रहा है और उपयुक्त समय पर इसकी घोषणा की जाएगी। ऐसी अटकलें हैं कि सरकार आर्थिक वृद्धि को पटरी पर लाने के लिये बिजली और रेलवे समेत विभिन्न क्षेत्रों को बड़ा प्रोत्साहन पैकेज देने की योजना बना रही है। चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में आर्थिक वृद्धि दर 5.7 प्रतिशत रही जो तीन साल का न्यूनतम स्तर है।

अगले वित्त वर्ष के लिए आशान्वित है नास्कॉम

नई दिल्ली। आईटी उद्योगों का संगठन नास्कॉम अगले वित्त वर्ष के लिए आशान्वित है। नास्कॉम को उम्मीद है कि वित्तीय क्षेत्र के प्रौद्योगिकी खर्च में बढ़ोतरी तथा अमेरिकी ग्राहकों की मांग बढ़ने से 150 अरब डॉलर का भारतीय आईटी उद्योग 2018-19 में मजबूत प्रदर्शन करेगा। नास्कॉम के अध्यक्ष आर चंद्रशेखर ने पीटीआई भाषा से कहा, अगले साल को लेकर सकारात्मक रहने की वजह है। हम स्थिति में सुधार देख रहे हैं। मांग पक्ष का रख सकारात्मक दिख रहा है। सकारात्मक संकेतकों के बारे में चंद्रशेखर ने कहा कि वित्तीय क्षेत्र का प्रौद्योगिकी में निवेश बढ़ने की संभावना है। इसके अलावा अमेरिका से भी मांग बढ़ेगी। उन्होंने संकेत दिया कि भारतीयों कंपनियों को भी नए सिरे से रणनीति बनानी पड़ेगी। चंद्रशेखर ने कहा कि कंपनियां अपने कर्मचारियों को नई डिजिटल प्रौद्योगिकियों का प्रशिक्षण दे रही हैं जिससे वे वृद्धि को आगे बढ़ा सकें। चंद्रशेखर ने कहा कि यह सभी कुछ अगले कुछ माह में आकार लेगा। इससे 2019 में अधिक सकारात्मक नतीजे देखने को मिलेंगे। उन्होंने भरोसा जताया कि उद्योग इस साल के वृद्धि के लक्ष्य को पा लेगा।

हल्दी से किसानों को हो रही अच्छी आय

हैदराबाद (एजेंसी)।

देश में हल्दी की वैज्ञानिक खेती करने वाले किसानों को बाजार व्यवस्था में बदलाव आने से न केवल अन्य फसलों की तुलना में अच्छी आमदनी हो रही है बल्कि ऋण लेकर खेती करने के दबाव से भी मुक्ति पा रहे हैं। आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में हल्दी की आधुनिक खेती करने वाले किसान 80 रुपए प्रति किलो की दर से हल्दी बेच रहे हैं और सही कीमत नहीं मिलने पर नई बाजार व्यवस्था ई -नाम का लाभ भी उठा रहे हैं। तेलंगाना के निजामाबाद कृषि मंडी में बड़ी संख्या में किसान हल्दी बेचने आते हैं। यहां से न केवल देश के अन्य हिस्सों में हल्दी का आपूर्ति की जाती है बल्कि विदेश में इसका निर्यात भी होता है। तेलंगाना के प्रधान कृषि सचिव सी पार्थसारथी ने बताया कि निजामाबाद कृषि मंडी से मुख्य रुप से यूरोप और खाड़ी के देशों को हल्दी का निर्यात किया जाता है। औषधीय गुणों से भरपूर हल्दी की खेती करनें वाले किसान ई नाम योजना के शुरु होने के बाद से बिचौलियों से बच रहे हैं और सीधे बाजार में अपना सामान पारदर्शी तरीके से बेच रहे हैं । किसानों को मुहमांगी कीमत नहीं मिलने पर उन्हें मुफ्त में भंडारण की सुविधा भी दी जाती है और यदि वे लम्बे समय तक इसका भंडारण करना चाहें तो उस पर दो लाख रुपए तक का ऋण भी दिया जाता है। निजामाबाद कृषि मंडी के दौरे पर आए दिल्ली के संवाददाताओं को किसानों ने बताया कि समाचार पत्रों में प्रतिदिन कृषि उत्पादों के बाजार मूल्य की जानकारी दी जाती है। इसके अलावा अन्य संचार माध्यमों से भी उन्हें जानकारी मिलती है। जब कीमत उनके अनुकूल होती है तो वे अपने उत्पाद कृषि मंडी में लाते हैं और निर्धारित प्रक्रियाओं को पूरा करने के बाद अपना उत्पाद बेचते हैं ।

इस कृषि मंडी में ई -नाम योजना अप्रैल 2016 में शुरु की गई थी। इसमें लगभग 50 हजार किसान पंजीकृत हैं। यहां कुल 423 खरीददार और 113 कमीशन एजेंट पंजीकृत हैं जो बोली लगाते हैं। इस मंडी में 45 कृषि उत्पादों की खरीद होती है। नई योजना लागू होने के बाद से लगभग 557 करोड़ रुपए मूल्य के 22 लाख क्विंटल से अधिक सामानों की खरीद की गई है ।

मंडी में आए किसानों ने बताया कि एक एकड़ में 50 से 60 क्विंटल हल्दी की पैदावार होती है जो धान और मक्का की तुलना में काफी अच्छा है। हल्दी के खेत में इसके साथ दलहनों की भी पैदावार लेते हैं जिससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी होती है। उन्होंने बताया कि 2011 में दुनियां में हल्दी की मांग काफी बढ़ी थी और इसकी कीमत 15000 रुपए प्रति क्विंटल तक पहुंच गई थी लेकिन अभी इसकी कीमत 8000 प्रति क्विंटल पर स्थिर है।

इसके बावजूद इसकी खेती अन्य फसलों की तुलना में बेहतर है। पार्थसारथी ने बताया कि ई-नाम योजना की अभी शुरुआत है। राज्य में कुल 180 कृषि मंडी हैं जहां किसान अपने फसलों को बेचते हैं। उन्होंने कहा कि ई-नाम योजना को लागू करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन राजनीतिक ईच्छाशक्ति से सब कुछ किया जा सकता है।

सूरत शहर भाजपा कार्यालय (उधना) 168 चौर्यासी विधानसभा से ओबीसी समाज के प्रबल दावेदार

यशराज चिन्तामणई मौर्या

अशोक पटेल (शानू)

राकेश कुमार शालीग्राम मौर्य

श्रीमती जिया बेन यादव

सुरेश कुमार मौर्य

एडवोकेट सुनील शर्मा (नाई)

सुरत शहर।आज ओ.बी.सी. समाज ने (अखिल भारतीय पिछड़ा वर्ग महासंघ)ने सूरत शहर(गुजरात) भाजपा कार्यालय पर अपनी ताकत बताया और 168विधानसभा चौर्यासी सीट से प्रबल दावेदारी में बढ़ -चढ़कर हिस्सा लिया।जिसमें 168 चौर्यासी विधानसभा से प्रबल दावेदारो के नाम यशराज चिन्तामणी मौर्य,सुरेशचन्द्र शर्मा(नाई),अशोक बी.पटेल,लक्ष्मण निषाद, सुरेश कुमार मौर्य, सुनिल शर्मा(नाई),श्रीमती जिया बेन यादव,राकेश शालीग्राम मौर्य ने अपना-अपना परिचय पत्र व बायोडेटा भाजपा पर्यवेक्षक को शौपा और अपने लिए 168चौर्यासी विधानसभा सीट से टिकट मागा।

सबसे बड़ी बात तो रही जब उनकी एकता देखने को मिली जब पर्यवेक्षकों द्वारा यह पूछा गया की यदि आपको टिकट नहीं मिला तो आप किसका सपोर्ट करना चाहेंगे बखूबी सबने एक ही उत्तर दिया यदि हमको नहीं मिलता है तो हमारे भाई यशराज मौर्या जी को दे दिया जाय।

इन सब बातों से पता चलता है की 99प्रपिछड़ा वर्ग भाजपा के साथ है और रहेगी कुछ ओबीसी समाज के आग्यवानो से बात किया तो पता चला की हमलोगों ने हमेशा भाजपा का साथ दिया लेकिन हमारे साथ हमेशा जब भी संगठन या नगरसेवक के हिस्सेदारी की बात आती है तो शौतेला व्यवहार होता है एक ही घर मे ,एक ही जाती को दो-दो पद दे दिये जाते है लेकिन पिछड़ा वर्ग को भूल जाते है ।देखना है आग्यवानो का कहना है हम हमेशा भाजपा के साथ रहते है और रहेगे देखना है पिछड़ा वर्ग के लिए भाजपा क्या करती है या पहले जैसा फिर हमारे साथ वही बर्ताव होगा।

12 एक्सप्रेस ट्रेनें सुपरफास्ट तो बना दीं लेकिन, आउटर पर रोक कर देते हैं लेट

सूरत। पश्चिम रेलवे ने 12 ट्रेनों को एक्सप्रेस से सुपरफास्ट में बदल दिया है। यात्रियों से सुपरफास्ट चार्ज भी वसूला जाने लगा है, लेकिन जो फायदा यात्रियों को मिलना चाहिए था वह अभी यात्रियों को नहीं मिल पा रहा है। इन ट्रेनों की टाइमिंग में तो सुधार कर दिया गया गया है, लेकिन इनकी टाइमिंग में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

– यही वजह है कि सुपरफास्ट ट्रेन का जो फायदा यात्रियों को मिलना चाहिए था वह नहीं मिल पा रहा है। रेलवे की तरफ से तर्क दिया गया है कि दिल्ली-मुंबई सेक्शन पर अभी स्पीड कन्वर्जन का काम पूरा नहीं हो पाया है। यही वजह है कि ट्रेनों को किन्हीं दो स्टेशनों के बीच मिड सेक्शन पर स्पीड रिस्ट्रिक्शन पर चलना पड़ता है या फिर इन्हें रोका जाता है।

नए टाइम टेबल में रनिंग टाइम में हो सुधार

– पीएसी सदस्य राकेश शाह ने रेलमंत्री पियूष गोयल से कहा कि इन ट्रेनों की स्पीड बढ गई है लेकिन रनिंग टाइम बिलकुल नहीं बदला, जिसका लाभ यात्रियों को नहीं मिलता। अक्टूबर में नए टाइम टेबल में इन सभी ट्रेनों का रनिंग टाइम टेबल 1 से डेढ घंटे कम की जाए। तभी स्टेशनों के बीच पहुंचने का अंतर कम हो सकेगा।

मैनेजमेंट = इस तरह ट्रेनों पर लगता है स्पीड रिस्ट्रिक्शन

– बांद्रा टर्मिनस से 12480 सूर्यनगरी एक्सप्रेस के रवाना होने का समय दोपहर 1.30 बजे का है ,बोरीवली के बाद सीधे सूरत पहुंचने का टाइम शाम 5.22 बजे का है। स्पीड बढाई गई इस ट्रेन को अब सूरत की दूरी शाम 5 बजे तक तय कर लेनी चाहिए लेकिन वापी, वलसाड के बीच स्पीड रिस्ट्रिक्शन से तेज चलने के बावजूद तय समय पर ही पहुंचती है।

– इसी तरह 11089 भगत की कोठी एक्सप्रेस साबरमती स्टेशन दोपहर 2.08 बजे पहुंचती है और वहा से 2.10 बजे रवाना होकर दोपहर 3.20 अहमदाबाद पहुंचती है लेकिन वहां से 1 घंटे बाद शाम 4.15 बजे रवाना होकर रात 8 बजे सूरत पहुंचती है, जबकि इसको शाम 7.30 बजे सूरत पहुंचना चाहिए। अहमदाबाद रेल ट्रैफिक की वजह से यह ट्रेन पिट जाती है। जबकि 11095 अहमदाबाद-पुणे एक्सप्रेस सूरत में रात 8 बजे आती है ।

भाजपा हो या कांग्रेस, अब तो प्रतिनिधि हमारा ही होना चाहिए

सूरत। सिल्क सिटी मार्केट, दिन शुक्रवार दोपहर का समय। 622 दुकानों वाला एक टेक्सटाइल बाजार। सूरत शहर के 145 से ज्यादा बाजारों में एक। टेक्सटाइल बाजार मतलब वह जगह जहां सूरत शहर जीता है।भारत का सबसे बड़ा सिंथेटिक कपड़ों का उत्पादक शहर सूरत। लेकिन जब हम सिल्क सिटी मार्केट में पहुंचे तो आधा घंटा हमें हमारी गाड़ी से उतरने में लग गया। वजह जाम और पार्किंग।

– जाम और पार्किंग भारत के ज्यादातर शहरों की आम समस्या है। लेकिन ऐसी जगह में जहां घर घंटे करोड़ों का कारोबार होता हो। जाम का आम नहीं माना जा सकता है। कार में बैठे-बैठे सोचता हूं यदि एक व्यापारी का एक घंटा हर रोज सिर्फ जाम और पार्किंग में निकल जाता होगा तो उसका कितना नुकसान होता होगा। सोचता हूं व्यापारियों से मिलूंगा तो सवाल करूंगा। जो कॉपरेशन, जो सरकार सुविधाओं पर तरह-तरह के टेक्स लेती है क्या वह सरकार जाम और पार्किंग के लिए कभी रिफंड की भी व्यवस्था करेगी ?

– 20-25 लोग इकट्ठा हो गए हैं। जिज्ञासा वश पूछता हूं आप लोग सब कहां-कहां से हैं। कोई सिकर, कोई जोधपुर, कोई कानपुर, कोई भागलपुर, तो कोई धनबाद बताता है। राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड। कोई 20 वर्ष कोई 25 तो कोई 15 साल पहले सूरत आया और सूरत का होकर रह गया।

– अब सब सूरत के अलग-अलग क्षेत्रों के मतदाता हैं। लोकसभा- विधानसभा चुनाव में वोट डालते हैं। अपना सांसद-विधायक चुनते हैं। लेकिन जीएसटी लागू होने के बाद से उन्हें लग रहा है कि ये सांसद-विधायक उनके नेता नहीं हैं। उनका प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। मैं तंज करता हूं- क्यों क्या हो गया। आपकी ही तो पार्टी है सिकर के एक कारोबारी गुस्से से भर जाते हैं कहते हैं जो

जनता का काम न करे, समस्या न सुने वो काहे को पार्टी।

– आगे कहते हैं- कपड़ा मंत्री स्मृति ईरानी सूरत आती हैं और दलित के घर खाना खाने का नाटक करतीं हैं, लेकिन उनके पास कपड़ा व्यापारियों ने मिलने का समय नहीं है। आज हमें वित्तमंत्री चोर कह देते हैं। यह सच है हम हमेशा से इस पार्टी के समर्थक रहे हैं लेकिन अब हमारा भरोसा टूट रहा है। और पार्टी तो हमारी बात तब सुनेगी न जब हमारा सांसद विधायक हमारी बात करेगा। इस बार तो किसी हिंदी भाषी को ही विधायक बनाना है।' सिकर के ये कारोबारी थे अरुण पोटोदिया। तो दिक्कत क्या है। आप संख्या में 25 लाख से ज्यादा हो। छह विधानसभा में से कम से कम चार को सीधे प्रभावित करते हो फिर आपका प्रतिनिधि क्यों नहीं है कोई कोई नेता क्यों नहीं है। बिहार के भागलपुर से 20 साल पहले सूरत आए अनिल कुमार रामुका बहुत संयत तरीके से कहते हैं कमी हम में भी है।

कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी आज द्वारका से चुनावी ब्यूगल फूकेंगे

अहमदाबाद। गुजरात में चुनावी सरगर्मियां तेज हो गई हैं और राष्ट्रीय नेताओं के दौरे बढ़ने लगे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बाद अब कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी गुजरात दौरे पर आ रहे हैं। अमेरिका से लौटने के बाद कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी आगामी 25 सितंबर को द्वारका की पवित्र भूमि से गुजरात चुनाव का आगाज करेंगे। लगातार तीन दिनों तक राज्य के विभिन्न इलाकों का दौरा कर राहुल गांधी गुजरात में कांग्रेस के पक्ष में माहौल बनाने का प्रयास करेंगे।

गुजरात में चुनावी मौसम के चलते राष्ट्रीय नेताओं का आवाजाही शुरू हो गई है। इसी कड़ी में कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी भी अपनी पार्टी के अच्छे दिन लाने का प्रयास करने के लिए गुजरात आ रहे हैं। राहुल गांधी आगामी 25 सितंबर से 2 सितंबर तक लगातार तीन दिनों तक दौरा करेंगे और कांग्रेस के नेता, कार्यकर्ता समेत आम लोगों से मुलाकात करेंगे। गुजरात में दिसंबर महीने में विधानसभा चुनाव कराए जाने की संभावना है। कांग्रेस के लिए गुजरात विधानसभा का चुनाव अस्तित्व का प्रश्न है, तो भाजपा के लिए प्रतिष्ठा की जंग है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह गुजरात विधानसभा चुनाव में 150 सीटों के लक्ष्य के साथ मैदान में उतर गए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कभी बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट के शिलान्यास तो कभी नर्मदा बांध परियोजना के लोकार्पण के लिए ताबड़तोब गुजरात का दौरा कर रहे हैं। दूसरी ओर शंकरसिंह वाघेला के जन विकल्प मोर्चा ने भाजपा और कांग्रेस की नींद उड़ा रखी है। राज्य के प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस राहुल गांधी के गुजरात दौरे को सफल बनाने के हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं। राहुल गांधी भी विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए गुजरात के तीन दिनों की यात्रा के दौरान मोदी सरकार समेत भाजपा को विभिन्न मोर्चों पर घेरने का प्रयास करेंगे। इससे पहले राहुल गांधी अहमदाबाद के साबरमती रिवरफ्रंट पर युवा संवाद कार्यक्रम के जरिए कार्यकर्ताओं से संवाद कर चुके हैं। गुजरात में होनेवाले विधानसभा चुनाव को वर्ष 2019 में होनेवाले लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल माना जा रहा है। गुजरात के चुनावी चक्रव्यूह को भेदने में भाजपा और कांग्रेस के नेता कमजोर दिखाई दे रहे हैं। इसीलिए दोनों राजनीतिक दल अपने राष्ट्रीय नेताओं को मैदान में उतार रहे हैं। गुजरात में भाजपा को सरकार विरोधी लहर का खतरा है तो कांग्रेस को आंतरिक कलह और गुटबंदी का खतरा सता रहा है। कांग्रेस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राहुल गांधी का गुजरात दौरा कांग्रेस को कितना फायदा पहुंचाता है, यह आनेवाला वक्त तय करेगा।

25 सितंबर को कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी द्वारका में भगवान द्वारकाधीश के दर्शन कर चुनाव अभियान की शुरुआत करेंगे। जहां से राहुल गांधी कल्याणपुर, भाटिया और खंभालिया में लोगों से मुलाकात करेंगे। वहां से राहुल गांधी जामनगर जाएंगे, जहां उनके रोड शो का आयोजन किया गया है। रोड शो के बाद नवसर्जन संवाद के तहत चांदी बाजार में व्यापारियों के साथ राहुल गांधी चर्चा करेंगे। नवसर्जन संवाद के बाद राहुल गांधी रात्रि विश्राम जामनगर में करेंगे। 26 सितंबर को जामनगर से ध्रोल, लतीपुर होते हुए राहुल गांधी टंकारा पहुंचेंगे।

सरकार ने शहरों जैसी सुविधाएं गांव में पहुंचाने का जन अभियान चलाया है: मुख्यमंत्री

गांधीनगर में देश की प्रथम 'प्रधानमंत्री एलपीजी पंचायत' आयोजित

गांधीनगर । गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने 'प्रधानमंत्री उज्जवला योजना' के तहत गांधीनगर के नजदीक स्थित मोटा इसनपुर गांव की गरीब महिला कोकिलाबेन परमार को 3 करोड़वां गैस कनैक्शन प्रदान कर देशभर में 'प्रधानमंत्री एलपीजी पंचायत' का शुभारम्भ करवाया। गुजरात से 'प्रधानमंत्री एलपीजी पंचायत' का शुभारम्भ करवाते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार और गुजरात सरकार ने गांवों में बसे गरीबों के घरों तक शहर जैसी सुविधाएं पहुंचाने का जन अभियान चलाया है। इसके कारण ही उज्जवला जैसी योजना के अंतर्गत धुंआमुक्त और लकड़ी- केरोसिन के ईंधन से मुक्ति के साथ महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए देशभर में केन्द्र सरकार ने यह योजना लागु की है। इस अभियान के अंतर्गत देशभर में एक लाख 'प्रधानमंत्री एलपीजी पंचायत' आयोजित करने का फैसला केन्द्र सरकार ने किया है। सरकार ने तय किया है कि महिला सशक्तिकरण के इस जन अभियान का शुभारम्भ करवाने का श्रेय गुजरात को मिला है और यह अवसर आने वाले दिनों में बदलाव का क्षण बन जाएगा। मात्र 16 माह में ही 3 करोड़ गैस कनैक्शन प्रदान कर केन्द्र सरकार ने 'गरीबों की सरकार' के रूप में और एक प्रशंसनीय कार्य किया है। इसका उल्लेख करते हुए रूपाणी ने कहा कि गरीबों के नाम से सत्ता प्राप्त करने वाली पूर्व की सरकारों ने गरीबी हटाओ का नारा ही दिया था, लेकिन गरीबों के उत्कर्ष के लिए कोई ठोस कार्य नहीं किया था। केन्द्र सरकार ने गरीबों के उत्कर्ष के लिए जनधन योजना द्वारा बैंक खाते खुलवाकर सहायता की रकम सीधे बैंक खाते में जमा करवाने की व्यवस्था करके भ्रष्टाचार को खत्म किया है। गरीबों को जीवन सुरक्षा के स्वरूप में बीमा सुरक्षा कवच दिया है। मुद्रा योजना के तहत गरीबों- जरूरतमन्दों को व्यापार- धन्धे के लिए ऋण दिये गए हैं और आवास विहीन परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से आवास उपलब्ध करवाए हैं। अब महिलाओं को रसोई के लिए धुंएं से मुक्ति देने वाली और पर्यावरण की रक्षा करने वाली रसोई गैस योजना- उज्जवला योजना शुरु की गई है। उज्जवला योजना को महिलाओं के उत्कर्ष की महत्वपूर्ण योजना करार देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि भूतकाल में गैस कनैक्शन लेना गरीबों के लिए एक स्वप्न के समान था, लेकिन यह अब साकार हुआ है। आनेवाले नजदीकी भविष्य में गुजरात के प्रत्येक घर में रसोई गैस की सुविधा हो और हर घर में शौचालय की सुविधा हो, इस दिशा में गुजरात सरकार ठोस कार्य कर रही है। आगामी 2 अक्टूबर- गांधी जयंती पर तक राज्य के हर घर में शौचालय की सुविधा हो, सरकार ऐसी स्थिति का निर्माण करना चाहती है। गुजरात सरकार ने मा वात्सल्य योजना द्वारा 2 लाख तक की स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करवाई है। गरीब-श्रमिक के लिए आशीर्वाद समान 10 रुपए में भोजन की व्यवस्था राज्य सरकार ने की है। राज्य में कोई व्यक्ति भूखा ना रहे, इसके लिए दो रुपए किलो गेहुं और 3 रुपए किलो चावल का वितरण किया जा रहा है। राज्य सरकार ने विधवा पैंशन की राशि दोगुनी करके इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। दिव्यांगों से लेकर वृद्धों की भी यह सरकार चिंता कर रही है और सही अर्थों में गरीबों-वंचितों के उत्कर्ष की चिंता करने वाली गुजरात सरकार है। रूपाणी ने पानी और प्राकृतिक गैस जैसे मानव उपयोगी स्त्रोतों के विवेकपूर्ण और मितव्ययी उपयोग का अनुरोध करते हुए कहा कि रसोई गैस के उपयोग से महिलाओं के जीवन में अनेक क्षेत्रों में बदलाव आएगा। धुंएं के कार्ण क्षय अथवा फेफड़ों के रोगों से भी मुक्ति मिलेगी। जल्दी भोजन बन जाने से समय की भी बचत होगी और महिलाएं ज्यादा समय तक कार्यरत रहकर और ज्यादा आर्थिक उपार्जन कर सकेंगी। महत्वपूर्ण पहल बतलाते हुए उन्होंने कहा कि देशभर में महिला सशक्तिकरण के इस जन अभियान में गांव की तमाम महिलाएं शामिल होकर योगदान दें।

सरकार रु. 900 प्रति मन समर्थन मूल्य से मूंगफली खरीदेगी : मुख्यमंत्री

अहमदाबाद। मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने आगामी 25 अक्टूबर से राज्य में 106 केन्द्रों पर रु. 900 प्रति मन समर्थन मूल्य पर मूंगफली खरीदने का ऐलान किया है। पिछले साल के मुकाबले इस दफा प्रति मन रु. 250 की वृद्धि की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस साल 100 फीसदी बारिश होने से मूंगफली, ऊड़द, अरहर और कपास समेत अन्य कृषि फसलों का उत्पादन हुआ है। विपुल उत्पादन किसानों को बाजार में सस्ती कीमत पर बेचना नहीं पड़े इसलिए सरकार ने रु. 900 प्रति मन समर्थन मूल्य से खरीदने का फैसला किया है। आगामी 25 अक्टूबर से राज्यभर में 106 केन्द्रों से किसानों से मूंगफली खरीदी शुरू की जाएगी। उन्होंने बताया कि वर्तमान में प्रति मन मूंगफली की कीमत रु. 600-650 है और सरकार ने रु. प्रति मन रु. 900 पर खरीदने का फैसला किया है। अर्थात किसानों को प्रति मन रु. 250 ज्यादा मिलेंगे। राज्य सरकार ने वर्ष 2016-1। में 109058 किसानों से 2.10। लाख मेट्रिक टन मूंगफली रु. 889.29 करोड़ के समर्थन मूल्य से खरीदी थी। जिसमें किसानों को रु. 1 15.24 करोड़ का फायदा हुआ था। इस साल समर्थन मूल्य में रु. 250 की वृद्धि किए जाने से किसानों को करीब रु. 500 करोड़ की अतिरिक्त रकम मिलेगी। राज्य सरकार ऊड़त, अरहर और कपास इत्यादि भी समर्थन मूल्य पर खरीदेगी। वर्ष 2016-1। में रु. 885.85 करोड़ के समर्थन मूल्य पर 1. 15 लाख मेट्रिक टन अहर 926 l6 किसानों से खरीदी गई थी, जिसमें किसानों को रु. 36.66 करोड़ का फायदा हुआ था। मुख्यमंत्री ने बताया कि वर्ष 2016-1। में मूंगफली का समर्थन मूल्य प्रति क्विंटल रु. 4220 था, जिसे बढ़ाकर इस साल रु. 4500 किया गया है। इसी प्रकार अरहर का समर्थन मूल्य पिछले साल रु. 5050 था, जिसे बढ़ाकर रु. 5450, ऊड़द के रु. 5000 से बढ़ाकर रु. 5400 और मूंग के समर्थन मूल्य रु. 5225 से बढ़ाकर इस वर्ष रु. 55 15 किए गए हैं। उन्होंने कहा कि इस साल अच्छी बारिश और नमी इत्यादि की वजह से राज्य में 32 लाख मेट्रिक टन मूंगफली, 3.21 लाख मेट्रिक टन अरहर, 0.64 लाख मेट्रिक टन मूंग और 0.83 लाख मेट्रिक टन ऊड़द और 13.60 लाख गांठ कपास उत्पादन का अनुमान है। आगामी 25 अक्टूबर से नाफेड, ग्रोफेड, गुजकोमासोल समेत 106 केन्द्रों से समर्थन मूल्य पर किसानों से खरीदी की जाएगी और इसका भुगतान एक सप्ताह के भीतर सीधे किसानों के बैंक एकाउंट में किया जाएगा।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्प्लेक्स सचीन रेल्वे स्टेश के पास,सूरत, जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, एवं तासीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, फोन नं. 9879141480 संपादक सुरेश मौर्या (पी आर बी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी) E-mail: krantisamay@gmail.com